मसीही कलीसियाओं का ऐतिहासिक विश्वास

(Ecumenical and Reformed Creeds and Confessions)

Hindi Version translated by
Mr. & Mrs. Rajkumar
&
Mr. & Mrs. Anup Arun Hiwale

दो शब्द

हम, Mid-America Reformed Seminary के छात्र उत्साहित और आनन्दित है, कि हम संशोधित सिद्धांतों और अंगीकार के हिन्दी संस्करण के गवाह हैं, यह हमारा असीम आनन्द है, कि हम इस बड़े काम में सहभागी हुए हैं। ये सिद्धांत और अंगीकार जो अब हिन्दी भाषा में उपलब्ध है, पिछली कई पीढ़ियों से सच्चे मसीहियों के पथ प्रदर्शक रहे हैं, ये सिद्धांत पूर्णता परमेश्वर के वचन पर आधारित और वचन का सार हैं और परमेश्वर के वचन की सच्चाई को सुरक्षित रखने के लिए कलीसियाओं द्वारा मान्यता प्राप्त है, और पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं का आईना है, कि हम सिर्फ मसीह द्वारा, सिर्फ अनुग्रह से, सिर्फ विश्वास द्वारा और सिर्फ परमेश्वर की महिमा के लिए बचाए गए हैं। यह हमारी प्रार्थना है कि इस हिन्दी संस्करण के द्वारा कलीसियाओं को दृढ़ता, पवित्र लोगों को उन्नति और परमेश्वर को महिमा मिलेगी।

Mid-America Reformed Seminary Student
Body Association
Dyer, Indiana, U.S.A.
Winter 2005

आभार

हम उन सभी लोगों का हृदय से आभार प्रकट करते हैं, जिन्होंने इन सिद्धांतों और अंगीकार को हिंदी में अनुवाद करने के लिए कड़ा परिश्रम किया है, जो राजकुमार, उनकी पत्नी ललिता राज व अनूप अरूण हिवाले, उनकी पत्नी प्रोमिला हिवाले है और उन सभी का जिन्होंने इस कार्य को निरंतर अपनी प्रार्थनाओं से सफलता तक पहुँचाया और उनका जिन्होंने इसके हिन्दी संस्करण के प्रकाशन में अपना आर्थिक सहयोग दिया।

परमेश्वर सभी को आशीषित करे।

हम आशा और प्रार्थना करते हैं, कि यह हिंदी संस्करण परमेश्वर की महिमा के लिए, उसकी कलीसिया और लोगों में अति लाभकारी होगा।

Published by : Hanokh Publication India
Website : www.mpmindia.org

Printed by : Saraswati Press, 6 Faltu Line, Dehradun
Ph. 2654194

All rights reserved. It can be only in the churches with prier written permission.
No individual reduction of this material should be done.

Hindi Holy Bible has been used for the scripture references.

विषय सूची

सिद्धांत/मत (Ecumenical Creeds)

प्रेरितों का विश्वास (Apostles' Creed) 1

नाएसिन सिद्धांत (Nicene Creed) 2

एथानसिएन सिद्धांत (Athanasian Creed) 3

आवेदन पत्र 5

एकता के तीन प्रारूप (Three Forms of Unity)

अंगीकार (Belgic Confession) 6

प्रश्नावली (Heidelberg Catechism) 31

नियम (Canons of Dort) 67

मानक (The Westminster Standards)

विश्वास का अंगीकार (The Confession of Faith) 109

विस्तृत प्रश्नावली (The Larger Catechism) 142

संक्षिप्त प्रश्नावली (The Shorter Catechism) 187

Ecumenical सिद्धान्त (Creeds)

हमारे विश्वास के अंगीकार के अनुच्छेद 9 में मसीह कलीसिया की पहली शताब्दी से तीन लेख (धर्ममत) जिन्हें हम स्वीकार करते हैं वे, Apostles' Creed (प्रेरितों का विश्वास), Nicene Creed और Althanasian Creed है। इन Creeds को Ecumenical Creeds कहा जाता है क्योंकि सामान्यत: इन्हें सभी चर्चों में स्वीकार कर मान्यता दी जाती है।

Apostles' Creed (प्रेरितों का विश्वास)

इस मत को प्रेरितों का विश्वास कहा जाता है। इसलिए नहीं कि इसे प्रेरितों ने रचा (निर्मित) किया, परन्तु इसलिये कि इसमें उनकी शिक्षा का सारांश निहित है।

I. मैं विश्वास रखता हूँ सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर, जिसने आकाश व पृथ्वी की रचना की।

II. और उसके इकलौते पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह पर,

III. कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से देहधारी होकर कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ,

IV. पेन्तुस पिलातुस के राज्य में दु:ख उठाया, क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया, गाढ़ा गया, अधोलोक में गया,

V. तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा,

VI. आकाश पर चढ़ गया और सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है।

VII. जहाँ से वह जीवितों व मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा,

VIII. मैं विश्वास रखता हूँ पवित्र आत्मा पर,

IX. विश्वासियों की मण्डली पर, संतों की संगति पर,

X. पापों की क्षमा,

XI. देह के जी उठने

XII. और अनंत जीवन पर - आमीन।

●

नाएसिन सिद्धान्त (NiceneCreed)

Nicene Creeed जिसे Nicaeno Conslanlinopolitan Creed भी कहा जाता है। यह गलत शिक्षाओं के विरोध में, विशेषकर Arianism के विरुद्ध, शुरूआती मसीह कलीसियाओं के कट्टर विश्वास का अंगीकार है।

मैं विश्वास करता हूँ एकमात्र, सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर, जिसने आकाश, पृथ्वी और सब कुछ जो उसमें सदृश्य और अदृश्य है, की सृष्टि की।

और एकमात्र प्रभु यीशु मसीह पर, परमेश्वर का प्रिय पुत्र, जो सृष्टि से पहले परमेश्वर का प्रिय (इकलौता) है। परमेश्वर का परमेश्वर, प्रकाश का प्रकाश, जो रचा नहीं गया, परमेश्वर के साथ पूर्णता एक समान, जिससे सभी चीजों की रचना हुई।

जो हम मनुष्यों और हमारे उद्धार के लिये, स्वर्ग से उतर कर पवित्र आत्मा से गर्भ धारण कर कुआंरी मरियम से उत्पन्न हुआ और मनुष्य बन गया, और पेन्तुस पिलातुस के राज्य में क्रूस पर चढ़ाया गया, उसने दु:ख उठाया और दफनाया गया और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया और परमेश्वर के दाहिने बैठा है, वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने दोबारा महिमा के साथ आएगा जिसके राज्य का अन्त न होगा।

और मैं विश्वास रखता हूँ पवित्र आत्मा पर, जो जीवन का स्वामी और जीवने देने वाला है। जो पिता और पुत्र से अग्रसर होती है। जिसकी पिता और पुत्र के साथ आराधना और महिमा होती है, जिसने भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें की।

और मैं विश्वास करता हूँ, कि एक पवित्र विश्वव्यापक कलीसिया पर, मैं पापों के छुटकारे के लिए एक बपतिस्मे को स्वीकार करता हूँ और मृतकों के पुनरुत्थान और आने वाले युग के जीवन पर आशा रखता हूँ। आमीन।

●

एथानसिएन सिद्धान्त (Athanasian Creed)

इस मत का नाम Athanasian (293-373 AD) के नाम पर पड़ा, जिसने त्रिएक परमेश्वर के सिद्धान्त के विरुद्ध Arian की गलत शिक्षाओं का प्रतिरोध किया, यद्यपि Athanasian ने इसे नहीं लिखा, इसका नाम Athanasian Creed इसलिए पड़ा क्योंकि 17वीं शताब्दी तक ऐसा समझा गया।

---

1. जो भी बचाया जायेगा उसके लिए सबसे पहले जरूरी है, कि वह विश्वव्यापक विश्वास में दृढ़ता से बना रहे, 2. जो हर एक को पूर्ण और निर्दोष रखता है, जिसके बिना वह अनन्तकाल के लिए नाश होगा। 3. विश्वव्यापक विश्वास यह है कि हम एक परमेश्वर की त्रिएकता, में और त्रिएकता की एकता में आराधना करते हैं, 4. न तो व्यक्तित्व में गड़बड़, न गुणों में बंटवारा करते हैं। 5. त्रिएक में एक परमेश्वर-पिता, दूसरा पुत्र और तीसरा पवित्र आत्मा है। 6. परंतु पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का परमेश्वरत्व एक ही है। समान महिमा और गौरव सभी का, अनन्त है। 7. जैसा पिता, वैसा ही पुत्र और वैसी ही पवित्र आत्मा है। 8. पिता अरचित, पुत्र अरचित और पवित्र आत्मा अरचित है। 9. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों ही मनुष्य की समझ से परे हैं। 10. पिता अनन्त कालीन, पुत्र अनन्तकालीन और पवित्र आत्मा अनन्तकालीन है। 11. फिर भी तीन अनन्तकालीन नहीं हैं वरन् एक अन्तकालीन है। 12. उसी प्रकार तीन अरचित और समझ से परे नहीं है, वरन् एक अरचित और एक समझ से परे है। 13. उसी प्रकार, पिता सर्वसामर्थी है, पुत्र सर्वसामर्थी है और पवित्र आत्मा सर्वसामर्थी है। 14. फिर भी सर्वसामर्थी तीन नहीं परंतु एक प्रभु है। 15. वैसे ही पिता परमेश्वर है, पुत्र परमेश्वर है और पवित्र आत्मा परमेश्वर है। 16. फिर भी तीन परमेश्वर नहीं है वरन परमेश्वर एक है। 17. वैसे ही पिता प्रभु है, पुत्र प्रभु है, और पवित्र आत्मा प्रभु है। 18. फिर भी तीन प्रभु नहीं है। वरन् प्रभु एक ही है। 19. इस प्रकार मसीहत की सत्यता से हम इस बात को स्वीकार करने के लिए बाध्य/प्रेरित होते हैं कि परमेश्वरत्व में हर एक व्यक्ति अपने आप में परमेश्वर और प्रभु है। 20. उसी प्रकार विश्वव्यापक धर्म से इस बात को नहीं मानते कि तीन परमेश्वर और तीन प्रभु है। 21. पिता किसी से बना नहीं, न ही उसकी सृष्टि हुई, न ही वह प्रिय (Begotten) किसी से निकलता है। 22. पुत्र सिर्फ पिता का है न ही वह बनाया गया न ही उसकी सृष्टि हुई। वरन वह इकलौता प्रिय है। 23. पवित्र आत्मा पिता और पुत्र की है। वह बनायी अथवा उसकी सृष्टि नहीं हुई न ही वह begotten है। वरन अग्रसर है। 24. इस प्रकार, एक ही पिता है तीन पिता नहीं, एक पुत्र है तीन पुत्र नहीं, एक ही पवित्र आत्मा है तीन नहीं। 25. यही त्रिएकता है। कोई भी एक

से पहले अथवा बाद में नहीं है, न ही कोई किसी से बड़ा अथवा महिमा में कम है। 26. वरन् तीनों एक साथ एक जैसे अनन्तकालीन और एक समान है। 27. इसलिए हर बात में जैसा पहले भी कहा गया है, कि एकता में त्रिएकता और त्रिएकता में एकता की आराधना होनी चाहिए। 28. इसलिए वह जो बचाया जाएगा उसे त्रिएकता के बारे में जानना आवश्यक है। 29. अनन्तकालीन उद्धार के लिए यह भी आवश्यक है कि वह हमारे प्रभु यीशु मसीह के अवतार (Incarnation) पर सही विश्वास करें। 30. सही विश्वास के लिए हमें विश्वास और अंगीकार करना है, कि हमारा प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर और मनुष्य है। 31. तत्व (गुणों) में पिता के समान परमेश्वर, संसार से पहले Begotten (प्रिय, इकलौता) और तत्व (गुण) में अपनी माता के समान, संसार में जन्म लिया। 32. तार्किक आत्मा और मानव शरीर में पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य। 33. पिता के समान उसके परमेश्वर तत्व में और पिता से छोटा अपने मनुष्यत्व में। 34. यद्यपि वह परमेश्वर और मनुष्य है, फिर भी वह दो नहीं वरन मसीह एक है। 35. परमेश्वत्व को शरीर में बदलने से एक नही वरन मनुष्यत्व को परमेश्वर में ले जाने से। 36. गुणों को मिलाने से एक नहीं वरन् व्यक्तित्व की एकता से एक। 37. जैसे तार्किक आत्मा और शरीर एक मनुष्य है वैसे ही परमेश्वर और मनुष्य एक मसीह है। 38. जिसने हमारे उद्धार के लिए दु:ख उठाया, नरक में भेजा गया, मृतकों में से तीसरे दिन जी उठा। 39. वह स्वर्ग पर चढ़ाया गया वह सर्वसामर्थी परमेश्वर पिता के दाहिने बैठा है। 40. वहाँ से वह जीवित और मृतकों के न्याय के लिये आएगा। 41. जिसके आने पर सभी मनुष्य, उनके शरीरों के साथ फिर से जी उठेंगे। 42. और अपने कामों का हिसाब देंगे 43. और जिन्होंने अच्छा किया है अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे और जिन्होंने बुरा किया है अनन्त आग (नरक) में प्रवेश करेंगे। 44. यह व्यापक विश्वास है जिसमें यदि कोई विश्वास योग्यता के साथ विश्वास नहीं करता तो उसका उद्धार नहीं है।

●

आवेदन पत्र

हम अधोहस्ताक्षरी, क्रिश्चिन रिफार्मड चर्च के शिक्षक, सुसमाचार के सेवक, जागृत मसीह सभा के प्राचीन और धर्म सेवक.....
..... of the classis of .....
..... यह पर सच्चाई और विवेक से प्रभु के सामने अपनी सहमति से यह घोषणा करते हैं, कि हम हृदय से विश्वास करते और सहमत हैं कि Reformed कलीसिया के अंगीकार और विश्वास के सिद्धांतों के सभी लेख पूर्णता परमेश्वर के वचन से सहमत और अनुसार है।

हम इसलिए वादा करते हैं, परिश्रम से इसे सिखाएंगे और इन सिद्धांतों की रक्षा करेंगे और अपनी सामूहिक प्रचार और लेखों में इसका विरोध नहीं करेंगे।

हम यह भी घोषणा करते हैं, कि हम सिर्फ उन गलत शिक्षाओं को अस्वीकार ही नहीं करते जो इन सिद्धांतों के विरुद्ध है। वरन् उन गलत शिक्षाओं से अपनी कलीसिया को सुरक्षित रखेंगे और यदि इनको लेकर हमारे मनों में कुछ सन्देह उत्पन्न होता है तो हम उसे सामूहिक नहीं करेंगे वरन् उसे synod के सामने रखेंगे और उनकी आधीनता में अपने आपको सौंपेंगे कि उसे परमेश्वर के वचन से परखा जाए।

●

बेल्जिक अंगीकार (Belgic Confession)

विश्वास का अंगीकार

संशोधित मसीही कलीसियों के सिद्धांतों का पहला मानक विश्वास का अंगीकार है। इसे सामान्यत: Belgic Confession कहा जाता है, क्योंकि इसका मूल दक्षिणी नीदरलैण्ड में हुआ जिसे अब बेल्डियम के नाम से जाना जाता है। इसका मुख्य लेखक Guido de Bres है जो नीदरलैंड में संशोधित (सुधरी) कलीसिया में प्रचारक था, जो 1567 में विश्वास के लिए शहीद हो गया। सोलहवीं शताब्दी में इस देश में कलीसियाओं को रोमन कलीसियाओं के शासन द्वारा बहुत यातना सताव सहनी पड़ी। deBress ने 1561 इस विश्वास के अंगीकार को तैयार किया, यह बताने के लिए की संशोधित विश्वास कोई विद्रोह नहीं है, और 1562 में इसकी एक प्रतिलिपि राजा फिलिप द्वितीय को भेजी। यद्यपि इसके द्वारा सताव से छुटकारा तत्काल प्राप्त नहीं हुआ और deBres और कई हजारों को अपने विश्वास के लिए अपने जीवनों को बलिदान करना पड़ा, परंतु debBre's ने जो शुरूआत की वह बनी रही, इसे नीदरलैण्ड में मान्यता मिली, जिसमें कुछ बदलाव के साथ, 1618-19, में Synod of Dort ने इसे स्वीकार कर लिया, जिसे कलीसियाओं के सभी सेवकों को मानना निर्धारित किया गया।

लेख -1

केवल एक ही परमेश्वर है

हम हृदय से विश्वास और मुंह से अंगीकार करते हैं, कि केवल (एकमात्र) एक ही साधारण और आत्मिक अस्तित्व है, जिसको हम परमेश्वर कहते हैं और वह अनन्त, अपरम्पार (समझ से परे) अदृश्य, अपरिवर्तनीय, असीमित, सर्वसामर्थी, पूर्ण बुद्धिमान, न्यायी, अच्छा और अच्छाइयों का बहता हुआ झरना है।

लेख -2

किस प्रकार (माध्यम) से हम परमेश्वर को जानते हैं

हम उसे दो माध्यमों से जानते हैं - पहला-संसार की रचना, सुरक्षा और इस पर प्रभुता, जो हमारे सामने खुली किताब के समान है, जिसमें सभी प्राणी, बड़े और छोटे अपने बहुत गुणों से हमें परमेश्वर की अदृश्य बातों, उसकी अनन्त सामर्थ और प्रभुता के ज्ञान को हम पर प्रगट करते हैं। जैसा प्रेरित पौलुस रोमियो 1:20 में कहते हैं। यह सभी बातें मनुष्य को परमेश्वर का पर्याप्त ज्ञान देती है, कि उनके पास कोई बहाना नहीं रह जाता दूसरा - वह अपने आपको पूर्णता-जितना आवश्यक है, कि हम इस जीवन में उसकी महिमा और अपने उद्धार के लिए उसे जाने, उसने अपने पवित्र वचन के द्वारा हम पर प्रगट किया है।

लेख -3

परमेश्वर का लिखित वचन

हम अंगीकार करते हैं, कि परमेश्वर का यह वचन मनुष्य की इच्छा द्वारा नहीं भेजा गया, न ही उन्होंने कहा परंतु (वरन्) मनुष्य ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, परमेश्वर के वचन को कहा, और बाद में परमेश्वर की विशेष सुरक्षा जो हमारे और हमारे उद्धार के लिए है। उसने अपने सेवकों-भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को आज्ञा दी, कि वे उसके प्रगट वचन को लिखित करे और उसने अपने आप अपनी उंगलियों से व्यवस्था की दो तख्तियां लिखी। इसलिए हम इन लेखों को पवित्र और सामर्थी वचन कहते हैं।

लेख -4

पवित्र वचन की प्रमाणित पुस्तकें

हम विश्वास करते हैं कि पवित्र वचन, दो पुस्तकों में निहित हैं जिन्हें पुराना नियम

और नया नियम कहा जाता है। जो प्रमाणित है जिसके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा जा सकता। परमेश्वर की कलीसिया इन्हें पूर्ण मान्यता दी जाती है।

पुराने नियम की पुस्तकें इस प्रकार हैं :

उत्पत्ति,	2 इतिहास,	दानिय्येल,
निर्गमन,	एज्रा,	होशे
लैव्यवस्था,	नहेम्याह	योएल,
गिनती,	एस्तेर,	आमोस,
व्यवस्थाविवरण	अय्यूब,	ओबद्याह,
यहोशू,	भजन संहिता,	योना,
न्यायिओ,	नीति वचन,	मीका,
रुत,	सभोपदेशक	नहूम,
1 शमूएल,	श्रेष्ठ गीत,	हबक्कूक,
2 शमूएल,	यशायाह,	सपन्याह,
1 राजा,	यिर्मयाह,	हाग्गै,
2 राजा,	विलापगीत	जकर्याह
1 इतिहास,	यहेजकेल	मलाकी

नये नियम की पुस्तकें

मत्ती,	इफिसियो,	इब्रानियो
मरकुस,	फिलिप्पियो,	याकूब,
लूका,	कुलुस्सियो,	1 पतरस,
यूहन्ना	1 थिस्सलुनिकियो,	2 पतरस,
प्रेरितों के काम,	2 थिस्सलुनिकियो,	1 यहून्ना
रोमियो,	1 तिमुथियुस,	2 यहून्ना,
1 कुरिन्थियो,	2 तिमुथियुस,	3 यहून्ना,
2 कुरिन्थियो,	तीतुस,	यहूदा
गलातियो,	फिलेमोन,	प्रकाशित वाक्य,

लेख -5

पवित्र शास्त्र कहाँ से अपनी महिमा और अधिकार प्राप्त करता है

हम इन पुस्तकों, सिर्फ इन्हें ही, अपने विश्वास का आधार, निश्चयता और कार्यों के लिए पवित्र और प्रमाणित मानते हैं और सभी बातें जो उनमें निहित है, उसमें बिना

सन्देह विश्वास करते हैं, इसलिए नहीं कि कलीसिया उन्हें स्वीकार करती और मान्यता देती है। वरन् इसलिए कि पवित्र आत्मा हमारे हृदय में गवाही देती है, कि ये परमेश्वर से है और इसलिए भी कि वे अपने आप में प्रमाण है और एक अन्धा (अज्ञानी) भी इस बात का देख (समझ) सकता है कि जो उनमें कहा गया है वह पूरा हुआ है।

लेख -6

धर्म की प्रमाणित पुस्तकें (Canonical) और Apocryphal पुस्तकों में अंतर

हम पवित्र पुस्तकों को apocryphal पुस्तकों से अलग करते हैं, अर्थात Esdras की तीसरी और चौथी किताबें, Tobit Judith, Wisdom, Jeses Siruch, Buruch की किताबें, ऐस्तर की पुस्तक में जोड़ा गया भाग, Furnance में तीन बच्चों के गीत, Susannah का इतिहास, Bell और Dragan मनेश्शे की प्रार्थना और Maccabecs की दो पुस्तकें - पवित्र पुस्तकों से अलग है, जिन बातों में ये पुस्तकें पवित्र पुस्तकों से सहमत होती है। कलीसिया में इन्हें पढ़ा और इनसे शिक्षा ली जा सकती है। परंतु इनमें ऐसी सामर्थ और प्रभाव नहीं है कि हम उनकी गवाही से उन्हें विश्वास और मसीही धर्म में स्थान दे, उन्हें दूसरी पुस्तकों से जो पवित्र पुस्तक है से कम सम्मान देते हुए ही इस्तेमाल करें।

लेख -7

पवित्र शास्त्र की पर्याप्तता (पूर्णता) ही विश्वास का एकमात्र नियम है

हम विश्वास करते हैं, कि पवित्र शास्त्र में परमेश्वर की इच्छा पूर्णता निहित है और उद्धार के लिए मनुष्य को जो भी विश्वास करना चाहिए पूर्णता इसमें सिखाया गया है। परमेश्वर की आराधना के लिए जो भी आवश्यक है, इनमें अधिकाई से लिखा गया है। इसलिए पवित्र वचन के अतिरिक्त अन्य शिक्षा देना अनुचित है। चाहे वह एक प्रेरित के द्वारा हो, अथवा चाहे वह स्वर्ग से कोई स्वर्गदूत हो, जैसा पौलुस ने कहा। जबकि परमेश्वर के वचन में कुछ जोड़ना और घटाना मना है। इससे यह बात प्रमाणित होती है कि इसके सिद्धान्त हर प्रकार से परिपूर्ण और सिद्ध है।

लेख -8

परमेश्वर गुणों में एक है, फिर भी तीन व्यक्तित्व में भिन्न है

इस सच्चाई और परमेश्वर के वचन के अनुसार, हम सिर्फ एक परमेश्वर में

विश्वास करते हैं, जो एक ही है, जिसमें सच्चाई, सत्य और अपने अवर्णनीय गुणों की अनन्तकालीन विविधता में तीन व्यक्ति हैं, जो पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा है। पिता सभी सदृश्य और अदृश्य चीजों की वजह, शुरुआत और उत्पत्ति है। पुत्र वचन, ज्ञान, और पिता की छवि है। पवित्र आत्मा सामर्थ और शक्ति है, जो पिता और पुत्र से अग्रसर होती है, तो भी परमेश्वर इस विविधता से तीन में विभाजित नहीं है। क्योंकि वचन सिखाता है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी में परमेश्वरत्व है, उनके गुणों में विविधता है जो ऐसी है कि ये तीन व्यक्ति एकमात्र एक परमेश्वर है।

इस प्रकार यह प्रगट है कि पिता पुत्र नहीं न ही पुत्र पिता है। उसी प्रकार पवित्र आत्मा न पिता है और न ही पुत्र। तो भी यह तीनों अलग-अलग नहीं, न ही विभाजित अथवा मिश्रित है। पिता ने शरीर धारण नहीं किया, न ही पवित्र आत्मा ने वरन सिर्फ बेटे ने शरीर धारण किया। पिता कभी बिना पुत्र अथवा बिना पवित्र आत्मा के नहीं है। तीनों एक साथ अनन्तकाली और महत्वपूर्ण है। न कोई पहला है न कोई अन्तिम, तीनों सच्चाई, सामर्थ, भलाई और करुणा में एक ही है।

लेख -9

एक परमेश्वर के व्यक्तित्व की त्रिएकता के बारे में प्रमाण

बाइबिल (पवित्र वचन) की गवाही और उसके कार्यों से हम ये सब जानते हैं, और वह जो हम स्वयं में महसूस करते हैं। पवित्र वचन की गवाही हमें सिखाती है, कि हम पवित्र त्रिएकता में विश्वास करें, जो पुराने नियम में कई स्थानों पर लिखी गई है, जिनकी सूची बनाना आवश्यक नहीं, कि उन्हें समझने और न्यायोचित ठहराने के लिए अलग किया जाए।

उत्पत्ति : 1:26:27 में परमेश्वर कहता है, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप और समानता में बनाए, और परमेश्वर ने उन्हें अपनी समानता में रचा, नर नारी करके उसने मनुष्य की सृष्टि की'', उत्पत्ति 3:22 ''मनुष्य हम में से एक के समान हो गया है।''

आओ हम मनुष्य को अपनी (हमारी) समानता में बनाए, इस बात से ऐसा प्रतीत होता है, परमेश्वर में एक से ज्यादा व्यक्ति है। वह कहता है परमेश्वर ने रचा, जिससे वह इसकी एकता प्रगट करता है। यह सत्य है कि वह यह नहीं कहता, कि परमेश्वरत्व में कितने व्यक्तित्व है परंतु जो पुराने नियम में धूंधला सा है, नये नियम में बहुत साफ बताया गया है। जब यरदन नदी में हमारे प्रभु का बपतिस्मा हुआ, पिता की आवाज को यह कहते सुना गया, ''कि यह मेरा प्रिय पुत्र है।'' पुत्र को पानी में देखा गया और पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में नजर आया, यही प्रारुप मसीह द्वारा बपतिस्मे में भी नियुक्त

किया गया, उसने कहा, ''सभी राज्यों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।''

लूका रचित सुसमाचार में जिब्राइल स्वर्ग दूत हमारे प्रभु की माता मरियम से कहता है ''पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझे छाया करेगी इसलिए वह पवित्र जो उत्पन्न होने वाला है परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।'' इसी प्रकार लिखा है- प्रभु यीशु का अनुग्रह और परमेश्वर पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की संगति हमेशा तुम सबके साथ हो और स्वर्ग में तीन का वर्णन है। पिता, वचन और पवित्र आत्मा, और ये तीनों एक हैं।

इन सभी स्थानों पर हम ये बात सीखते हैं, कि एक में तीन, एक ही ईश्वरीय गुणों में है। यद्यपि यह शिक्षा (सिद्धान्त) सभी मनुष्य की समझ से परे है, तब भी हम परमेश्वर के वचन के माध्यम से इस पर विश्वास करते हैं। परंतु इसके पूर्ण ज्ञान और उसके लाभ को यहाँ के पश्चात् स्वर्ग में प्राप्त करेंगे।

इसके अतिरिक्त हमें इन तीन व्यक्तियों के हमारे प्रति कार्य और पद को भी समझना है। पिता अपनी सामर्थ से सृष्टिकर्ता कहलाते हैं। पुत्र अपने लहू से उद्धारकर्ता और छुड़ाने वाला, पवित्र आत्मा हमारे हृदय में वास करने से हमारा शुद्ध करने वाला है।

पवित्र त्रिएकता की शिक्षा हमेशा प्रेरितों के समय से आज तक सच्ची कलीसियों द्वारा गलत शिक्षाओं, यहूदी, इस्लामी, और गलत मसीह शिक्षा इत्यादि के विरुद्ध पूर्ण निश्चयता के साथ मानी और लागू की गई है। कट्टर सिद्धांत पंथियों ने, हमेशा इस शिक्षा को माना और गलत शिक्षा को गलत ठहराया है। इसलिए इस समय हम स्वेच्छा से तीन मत मानते हैं जो हैं प्रेरित का विश्वास, Nicea और Athanasius की सिद्धान्तिक मत, उसी प्रकार जैसे प्राचीन पिताओं द्वारा स्वीकृत है।

लेख -10

यीशु मसीह सच्चा और अनन्तकालीन परमेश्वर है

हम विश्वास करते हैं, कि अपने ईश्वरीय स्वभाव के अनुसार यीशु मसीह परमेश्वर का अनन्तकाल से इकलौता और प्रिय पुत्र है। जो बनाया अथवा रचा नहीं गया, वरन् पिता के साथ महत्वपूर्ण और अनन्तकालीन, उसके तत्व की छवि (समानता) और उसकी महिमा का तेज, सभी बातों में पिता के समान है। वह परमेश्वर का पुत्र उस समय से नहीं है, जब उसने हमारा स्वभाव धारण किया, वरन् अनन्तकाल से जिस प्रकार यह गवाहियां सिखाती हैं, जब उनकी तुलना होती है। मूसा कहता है-परमेश्वर ने जगत की सृष्टि की और यहून्ना कहते हैं कि सभी चीजें वचन के द्वारा बनायी गयी, जिसे वह परमेश्वर कहता है। प्रेरित कहता परमेश्वर ने जगत को अपने पुत्र द्वारा रचा, उसी प्रकार

कि परमेश्वर ने सभी चीजों की सृष्टि यीशु मसीह द्वारा की। इसलिए यह समझना आवश्यक है, कि जिसे परमेश्वर कहा गया, वचन, पुत्र और यीशु मसीह अस्तित्व में थे, जब उसके द्वारा जगत की सृष्टि हुई। इसलिए भविष्यद्वक्ता भी कहते हैं, उसका आगे जाना आदि से अनन्त काल का है, और प्रेरित कहते हैं उसकी न तो शुरूआत है और न ही अन्त, वह इसलिए सच्चा, अनन्तकालीन और सर्वसामर्थी परमेश्वर है। जिसकी हम आराधना और सेवा करते हैं।

लेख -11

पवित्र आत्मा सच्चा और अनन्तकालीन परमेश्वर है

हम विश्वास और अंगीकार करते हैं, कि पवित्र आत्मा अनन्तकाल से पिता और पुत्र से अग्रसर होती है और इसलिए न बनाई गई, न रचित हुई, न ही इकलौती है, वरन् दोनों से अग्रसर (आगे बढ़ती) होती है, जो पवित्र त्रिएक में तीसरा व्यक्ति है। पिता और पुत्र के साथ महिमा, गुणों, गौरव और महानता में एक समान है, इसलिए जैसा वचन सिखाता है, सच्चा और अनन्तकालीन परमेश्वर है।

लेख -12

सभी चीजों की सृष्टि, विशेषकर स्वर्ग दूतों की

हम विश्वास करते हैं, कि पिता ने वचन से जो कि उसका पुत्र है, से जब उसे उचित लगा, आकाश, पृथ्वी और सभी प्राणियों की सृष्टि की, हर एक प्राणी को अस्तित्व, आकार, रूप और कई पद दिए, कि वे अपने सृष्टिकर्ता की सेवा करे, वह अपनी अनन्त सामर्थ और देखरेख से मानव के सेवा कार्य के लिए, उन्हें स्थिरता और शासन देता है कि मनुष्य अपने परमेश्वर की सेवा करे।

उसने भले स्वर्गदूतों की सृष्टि की, कि वे उसके संदेश वाहक हो और उसके चुनो हुओ की सेवा करे, जिनमें से कुछ उस श्रेष्ठता, जिसमें उनकी सृष्टि हुई थी, से गिर कर अनन्त काल की नरकीय यातना में चले गये, और अन्य जिनमें परमेश्वर का अनुग्रह बना रहा, वे निरन्तर पहली स्थिति में स्थिर रहे। शैतान और बुरी आत्माएं इतनी गिर गई कि वे परमेश्वर और हर एक भली चीज की दुश्मन है और खूनी के समान अपनी पूर्ण सामर्थ से इस ताक में रहते हैं, कि कलीसिया और इसके सदस्यों का नाश कर दे, और अपने बुराई, छल, धोखे से सभी को नाश कर दे, और इस प्रकार अपनी अधार्मिकता और बुराई से अनन्त यातना के हवाले किए गये हैं। जहाँ उनके लिए प्रतिदिन असहनीय यातना है।

इसलिए हम सदूकियों की घृणित गलत शिक्षा को अस्वीकार करते है, जो आत्माओं और दूतों के अस्तित्व का इंकार करते हैं और Maniches का भी जो, मानते हैं कि शैतान अपने आप उत्पन्न हुए और वे अपने स्वभाव से ही, बिना भ्रष्ट हुए बुरे और अधर्मी हैं।

लेख -13

परमेश्वर की बुद्धिमता (कृपा दृष्टि) और उसका सभी चीजों पर शासन

हम विश्वास करते हैं, कि उसी भले परमेश्वर ने सब कुछ की सृष्टि करने के बाद उसे भाग्य अथवा हालात के सहारे नहीं छोड़ दिया, परंतु वह अपनी पवित्र इच्छा के अनुसार सब पर शासन और प्रभुता करता है, और इस संसार में बिना उसकी इच्छा के कुछ नहीं होता, तब भी परमेश्वर जो पाप होते हैं, उनका कर्ता नहीं है। न ही इसके लिए उस पर दोष लगाया जा सकता है। उसकी सामर्थ और अच्छाई इतनी महान और समझ से परे है, कि वह अपने कार्यों को अति उत्तमता और सही प्रकार से व्यवस्थित करते हैं। तब भी जबकि शैतान और बुरे लोग अनुचित कार्य करते हैं। और वह जो कुछ करता है वह मनुष्य की समझ से बाहर है। हम लोग अपनी योग्यता से बढ़कर उसके विषय में जान और स्वीकार नहीं कर सकते। परंतु बिना इस सीमा को पार किये हम बड़ी दीनता, आदर से परमेश्वर के धर्मी न्याय, जो हमसे छिपा है, प्रशंसा करते हैं और हम इस बात से संतुष्ट होते हैं कि हम मसीह के शिष्य हैं और वही चीजे (बातें) सीखते हैं जो उसने अपने वचन में प्रगट की है। यह सिद्धान्त हमें असीम तसल्ली प्रदान करते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे जीवन में कुछ भी अचानक नहीं होता परंतु हर बात हमारे अति अनुग्रहकारी स्वर्गीय पिता द्वारा निर्देशित होती है। जो हमारे ऊपर पिता के समान दृष्टि रखता है और सभी प्राणियों को अपनी सामर्थ के आधीन रखता है। कि हमारे सर का एक बाल (वे सभी गिने गये हैं) न ही एक छोटी चिड़िया भूमि पर, हमारे पिता के इच्छा के विरुद्ध गिरते हैं। जिसमें हम पूर्ण भरोसा करते हैं, हम इस बात को समझते हैं कि वह शैतान और हमारे दुश्मनों को अपने नियंत्रण में रखता है, कि बिना उसकी अनुमति के वे हमारा नुकसान नहीं कर सकते।

और इसलिए हम Epicureans (गलत शिक्षकों) की घृणित गलती को अस्वीकार करते हैं, जो सिखाते हैं, कि परमेश्वर का कुछ लेना देना नहीं उसने सब कुछ हालात (किस्मत) के सहारे छोड़ दिया है।

लेख -14

मनुष्य की सृष्टि और पतन, और जो वास्तव में अच्छा है करने में उसकी असमर्थता

हम विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर ने मनुष्य को पृथ्वी की मिट्टी से रचा और उसे अपनी समानता, भलाई, धार्मिकता और पवित्रता की एकरूपता में बनाया और यह योग्यता दी, कि सभी बातों में वह परमेश्वर की इच्छा में सहमत हो। परंतु उसने अपने

समान न ही अपनी श्रेष्ठता को जाना, वरन् अपनी इच्छा से शैतान की बात मानकर अपने आपको पाप, और परिणामस्वरूप मृत्यु और श्राप के आधीन किया। जीवन के लिये जो आज्ञा उसे मिली, उसने उसे तोड़ा और पाप करके अपने आपको परमेश्वर, जो उसका वास्तव का जीवन था से अलग कर लिया, अपने पूर्ण स्वभाव को भ्रष्ट करके वह अपने ऊपर शारीरिक और आत्मिक मृत्यु ले आया और दुष्ट होकर अपने सभी मार्गों में दूषित/भ्रष्ट हो गया, उसने अपने सारे उत्तम दानों को खो दिया, जो उसने परमेश्वर से पाये थे, सिर्फ एक छोटा हिस्सा उसके पास बचा रहा जो उसे कोई बहाना न देने के लिए पर्याप्त था, जो भी प्रकाश हम में है, वह अन्धकार में बदल गया, जैसा वचन सिखाता है प्रकाश तो अन्धकार में चमकता है और अन्धकार ने उसे न पहचाना। यहाँ संत यूहन्ना मनुष्य को अन्धकार कहता है।

इसलिए वह सब कुछ, जो मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा के विरोध में सिखाया जाता है, उसे हम अस्वीकार करते हैं। जबकि मनुष्य पाप का दास है और जो उसे स्वर्ग से दिया जाता है के अतिरिक्त कुछ नहीं पा सकता, कौन इस बात पर घमण्ड कर सकता है कि वह स्वयं कुछ अच्छा कर सकता है। मसीह कहता है कोई मनुष्य मेरे पास नहीं आता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा है नजदीक न लाए। कौन अपनी इच्छा में महिमा पाएगा, कौन समझ सकता कि शारीरिक मन, (बुद्धि) परमेश्वर के विरुद्ध दुश्मनी रखती है। कौन अपने ज्ञान की बातें कर सकता है, जबकि स्वाभाविक मनुष्य परमेश्वर की आत्मा की बातों को स्वीकार नहीं करता? संक्षिप्त में कौन सुझाव देने का साहस कर सकता है। जबकि हम जानते हैं कि हम अपने आप में पूर्ण नहीं हैं। वरन् हमारी परिपूर्णता परमेश्वर की है? और इसलिए जो प्रेरित कहते हैं, उसे दृढ़ता, निश्चियता से मानना चाहिए कि ''परमेश्वर हममें इच्छा और कार्य दोनों अपनी भली इच्छा के लिए करता है। कोई भी ऐसी इच्छा और समझ नहीं जो ईश्वरीय समझ और इच्छा के अनुकूल है, सिवाए उसके जो मसीह ने मनुष्य में निर्मित (पैदा) की है, जिसे वह हमें सिखाता है जब वह कहता, ''मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते।''

लेख -15

मौलिक पाप

हम विश्वास करते हैं, कि आदम की अनाज्ञाकारिता से मौलिक पाप सभी मनुष्यों में फैल गया, जो सम्पूर्ण स्वभाव का दूषित, भ्रष्ट होना है और आनुवंशिक रोग है, जिससे माँ के गर्भ में शिशु भी प्रभावित होते हैं। जो मनुष्य में सब प्रकार के पाप को जन्म देता है। इसलिए यह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित और बुरा है, और काफी है कि परमेश्वर

पूरी मानव जाति को दोषी ठहरा दे। यह (पाप) बपतिस्मे के द्वारा पूर्णता समाप्त अथवा अलग नहीं हो जाता क्योंकि पाप हमेशा घृणित स्रोत से बढ़ता रहता है, जैसे पानी झरने से, परमेश्वर की संतान इससे प्रभावित होते हैं कि वे दोषी ठहरे पर परमेश्वर की करुणा और अनुग्रह से उन्हें क्षमा प्राप्त होती है। इसलिए नहीं कि वे पाप में पड़े रहें वरन् इसलिए कि विश्वासी भ्रष्टता से अलग हो और मृत्यु के शरीर से छुटकारे की कामना करे, इसलिए हम Pelagians की गलत शिक्षा को अस्वीकार करते हैं जो कहते हैं कि पाप सिर्फ अनुकरण करने से होता है।

लेख -16

अनन्तकालीन चुनाव

हम विश्वास करते हैं, आदम के सभी वंशज, हमारे पहले माता पिता के पाप से नारकीय यातना और विनाश में गिर चुके हैं, तब परमेश्वर अपने आपको जैसा वह है प्रगट किया है। **दयालु** और **न्यायी, दयालु**-क्योंकि वह अपने अनन्त और अपरिवर्तनीय इच्छा से, अपनी भलाई में बिना उनके किसी कार्य को ध्यान में रखकर, मसीह यीशु में चुन लिया है, उन्हें इस नारकीय यातना से छुड़ाता और बचाकर रखता है, **न्यायी** - दूसरों को पतन और यातना स्थिति में छोड़कर जहाँ वे स्वयं गये हैं।

लेख -17

पतित मनुष्य को फिर से संभालना (उठाना)

हम विश्वास करते हैं, हमारे अनुग्रहकारी परमेश्वर ने अपनी प्रशंसनीय बुद्धि और भलाई में, इस बात को देखते हुए, कि मनुष्य ने अपने आपको शारीरिक और आत्मिक मृत्यु के आधीन किया है और अपने आपको पूर्णता दुःख में पहुँचाया है। वह (परमेश्वर) उसे ढूंढने और तसल्ली देने में खुश हुआ और जब मनुष्य डरते हुए उसकी उपस्थिति से भागा, उससे वायदा किया कि वह अपने पुत्र को (जो एक स्त्री से जन्म लेगा) सर्प का सिर कुचलने और मनुष्य को आशीष देने के लिए देगा।

लेख -18

यीशु मसीह का अवतार

हम अंगीकार करते हैं, कि परमेश्वर ने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से जो वायदा हमारे पूर्वजों के साथ किया था, उसे पूरा किया, जब उसने नियुक्त (निर्धारित) समय अपने इकलौते, अनन्तकालीन पुत्र को संसार में भेजा, जिसने सेवक स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया, पाप के अतिरिक्त, सच्चे मनुष्य स्वभाव की

सभी कमजोरियों को ग्रहण किया, बिना पुरुष के पवित्र आत्मा की सामर्थ से कुंवारी मरियम में गर्भधारण किया, और शरीर के रूप में सिर्फ मनुष्य का स्वभाव ही नहीं, वरन् मनुष्य आत्मा को भी धारण किया, ताकि वह सच्चा मनुष्य हो। इसलिए जबकि शरीर और आत्मा दोनों का विनाश हुआ था, यह जरूरी था कि वह दोनों को धारण करे कि दोनों को बचा सके (का उद्धार कर सके)।

इसलिए हम यह अंगीकार करते हैं, (Anabaptist की गलत शिक्षा के विरुद्ध जो मसीह के मनुष्य शरीर की प्राप्ति उसकी माता से हुई का इन्कार करती है) कि मसीह बच्चों के खून और माँस में शामिल हुआ, कि वह दाऊद के शेर के शरीर का फल है, जो दाऊद के वंश में शरीर के अनुसार पैदा हुआ, जो मरियम के गर्भ का फल है, दाऊद की एक शाखा, यिशे की जड़ की डाली है, यहूदा के गोत्र से निकला है, शरीर के अनुसार यहूदियों का वंशज, अब्राहम के नस्ल का है, जबकि उसने अब्राहम के बीज को अपनाया और सभी बातों में, पाप को छोड़कर अपने भाइयों के समान बना, तो वह सत्यता में हमारा इम्मानुएल है अर्थात परमेश्वर हमारे साथ है।

लेख -19

मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभावों की एकता और भिन्नता

इस धारणा से हम विश्वास करते हैं, कि पुत्र का व्यक्तित्व अविभाजिए रीति से मनुष्य स्वभाव के साथ संगठित और जुड़ा है। इसलिए परमेश्वर के दो बेटे, नहीं, न ही दो पात्र (व्यक्ति) है, वरन दो स्वभाव एक व्यक्ति में संगठित है। फिर भी हर स्वभाव की अपनी अलग विशेषता है। जिस प्रकार दैवीय स्वभाव हमेशा बिना सृष्टि किये है, और अनन्तकालीन है और स्वर्ग और पृथ्वी पर उसकी छाया बनी रहती है। उसी प्रकार मनुष्य के स्वभाव ने अपनी विशेषता को बनाए रखा, और एक सृष्टि (प्राणी) ही रहा, जिसकी उत्पत्ति हुई, जिसका स्वभाव, गुण, सीमित है और शरीर के सभी गुण उसमें है और यद्यपि अपने पुनरुत्थान से अपने शरीर को अविनाशी कर दिया, तो भी उसने अपने मनुष्य के स्वभाव की सच्चाई को नहीं बदला और हमारा उद्धार और पुनरुत्थान उसके शरीर की सच्चाई पर भी निर्भर होता है।

परंतु ये दोनों स्वभाव इस प्रकार से एक व्यक्ति में एक हो गये हैं, कि वे उसकी मृत्यु से भी विभाजित नहीं हुए। इसलिए मरते समय जब उसने पिता के हाथ में जो आत्मा सौंपी वह सच्ची थी, जो उसके शरीर से अलग हुई, परंतु ईश्वरीय स्वभाव हमेशा मनुष्य स्वभाव के साथ एक बना रहा, तब भी जब उसका शरीर कब्र में पड़ा रहा, उसका ईश्वरीय स्वभाव समाप्त नहीं हुआ, वैसे ही जैसे शैशवकाल में थोड़े समय के लिए साफ

रीति से प्रगट नहीं हुआ था, इसलिए हम ये अंगीकार करते हैं, कि वह पूर्ण परमेश्वर और पूर्ण मनुष्य है। अपनी मृत्यु को नाश करने वाली सामर्थ से परमेश्वर, और अपने शरीर की कमजोरी के अनुसार हमारे लिए मरने से पूर्ण मनुष्य है।

लेख -20

परमेश्वर ने अपनी करुणा और न्याय मसीह में प्रगट किया है

हम विश्वास करते हैं, कि पूर्ण करुणामयी और न्यायी परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में भेजाा, कि वह उस स्वभाव में हो जिसमें आज्ञा तोड़ी गयी थी, कि उसी स्वभाव में वह अपने दु:खों और मृत्यु के द्वारा, पाप के दण्ड को अपने ऊपर ले ले और परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करे।

इसलिए परमेश्वर ने हमारे पापों को उस पर डाल दिया और अपने न्याय को अपने पुत्र के विरुद्ध प्रगट किया और अपने परिपूर्ण प्रेम में, हम जो अपराधी और घृणित थे, अपनी करुणा और भलाई हमें प्रदान की, हमारे लिए उसने अपने पुत्र को मृत्यु के आधीन किया और हमारी धार्मिकता के लिए उसे मृतकों में से जिंदा किया, कि उसके द्वारा हम अविनाशी हो और अनन्त जीवन प्राप्त कर सके।

लेख -21

हमारे एकमात्र महायाजक यीशु मसीह का हमारे लिए संतुष्टिकरण

हम विश्वास करते हैं, कि मलिकिसिदक के स्वरूप में यीशु मसीह शपथ के साथ अनन्तकाल के लिए महायाजक नियुक्त हुआ है और उसने हमारे बदले अपने आपको पिता के सामने प्रस्तुत किया, कि उसके क्रोध को संतुष्ट करते हुए उसे प्रसन्न करें, अपने आपको क्रूस पर चढ़ाने और अपने पवित्र लहू को हमारे पापों के लिए बहाने से, जैसाकि भविष्यद्वक्ताओं ने पहले कहा था। पवित्र शास्त्र में ऐसा लिखा है, ''वह हमारे पापों के लिए घायल किया गया, हमारे पापों के लिए कुचला गया, हमारी शांति के लिए उसने दण्ड सहा, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए, उसे मेम्ने के समान बलि के लिए ले जाया गया, उसकी गिनती अपराधियों के साथ हुई'' और पिलातुस द्वारा अपराधी ठहराया गया। यद्यपि पहले उसने उसे निर्दोष घोषित किया था। इसलिए उसने वह सब ठीक किया, जो उसने नहीं बिगाड़ा था और अधर्मी के लिये धर्मी ने दु:ख सहा। उसने अपने शरीर और आत्मा में हमारे पापों के भयायक दण्ड को अनुभव किया कि उसका पसीना खून के समान जमीन पर गिरने लगा, उसने पुकार कर कहा, ''मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया'' और यह सब कुछ उसने हमारे पापों के प्रायश्चित (छुटकारे) के लिए सहा।

इसलिए हम पौलुस प्रेरित के साथ कहते हैं, कि हम कुछ नहीं जानते, ''यीशु मसीह जो क्रूस पर मारा गया, हम हर चीज को हानि समझते हैं और हमारे प्रभु यीशु मसीह के उत्तम ज्ञान के सामने अस्वीकार करते हैं।'' जो हमारे दु:ख में हर प्रकार से तसल्ली देता है। इसलिए यह कतई आवश्यक नहीं, कि हम कुछ नया माध्यम परमेश्वर से मेल मिलाप के लिए तलाश करें अथवा बनाएं, इसके अतिरिक्त उसने उस बलिदान से जिसे एक बार दिया, सभी को जो पवित्र किये गये हैं, हमेशा के लिए सिद्ध किया है। यह भी कारण है, कि परमेश्वर के स्वर्गदूत द्वारा उसे यीशु कहा गया, जिसका मतलब उद्धारकर्ता है, क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से छुड़ाएगा।

लेख -22

यीशु मसीह पर विश्वास से हमें धर्मी ठहराया जाना

हम विश्वास करते हैं, कि इस बड़े भेद (रहस्य) के सही ज्ञान को समझने के लिए, पवित्र आत्मा हमारे हृदय में सही विश्वास जागृत करती है। जिससे हम यीशु मसीह को उसके गुणों, सच्चाई के साथ अपनाते हैं और उसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहते। जरूरी बात जिस पर ध्यान देना है, या तो वे सभी बातें उद्धार के लिए आवश्यक है, वे यीशु में नहीं है, और यदि सभी उसमें है तब वे जो यीशु मसीह को विश्वास में अपनाते हैं, उन्हें उसमें पूर्ण उद्धार प्राप्त है। इसलिए यदि कोई इस बात को कहता है, कि मसीह पर्याप्त नहीं है और उसके अलावा भी कुछ और जरूरी है। यह अति भद्दा और निन्दनीय है। इसका मतलब है कि मसीह अधूरा उद्धार करता है।

इसलिए पौलुस के साथ हम उचित रीति से कहते हैं कि ''हम विश्वास से धर्मी ठहराये गये हैं। विश्वास से कार्यों से नहीं, तथापि इसे और साफ बताने के लिए, हमारा तात्पर्य ये नहीं है कि विश्वास अपने आप में हम धर्मी बनाता है। यह तो सिर्फ एक माध्यम है, जिससे हम मसीह, हमारी धार्मिकता को अपनाते हैं। यीशु मसीह हमें अपने सभी गुण और पवित्र कार्य जो उसने हमारे बदले में किये हैं, हमें प्रदान करता है, जो हमारी धार्मिकता है। और विश्वास एक माध्यम है, जो हमें उसके और उसके सभी फायदे जो हमारे हो जाते हैं के साथ संगति रखता है, जो हमें हमारे पापों से निर्दोष ठहराने के लिए जरूरत से भी अधिक होते हैं।

लेख -23

परमेश्वर के सामने हमारा धर्मीकरण किस बात में निहित होता है

हम विश्वास करते हैं, कि हमारा उद्धार यीशु मसीह के कारण हमारे पापों की क्षमा

(पश्चाताप) में निहित होता है, और उसमें ही हमारी धार्मिकता परमेश्वर के सामने होती है। जैसा दाऊद और पौलुस सिखाते हैं- यह मनुष्य के लिए आशीषित है, कि परमेश्वर अपनी धार्मिकता हमें कार्यों के बिना प्रदान करता है और पौलुस कहता है, कि हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहराये गये हैं। उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है।

इसलिए हम हमेशा इस बात को दृढ़ता से मानते हुए परमेश्वर को सारी महिमा देते हैं। अपने आपको उसके सामने नम्र करते, और अपने में किसी बात पर, न ही अपने किसी गुण पर भरोसा करते हुए अपनी वास्तविकता को स्वीकार करते हैं। सिर्फ यीशु मसीह जो क्रूस पर चढ़ाया गया की आज्ञाकारिता जो विश्वास से हमें प्रदान होती है, पर भरोसा और विश्वास करते हैं। यह हमारे अपराधों को ढकने और परमेश्वर तक पहुँचने में हमें दृढ़ता देने के लिए पर्याप्त है, जो हमें विवेक के डर व भयानकता से आजाद करती है, बिना हमारे पहले पिता आदम के उदाहरण का अनुकरण किए हुए जिसने भय से अपने आपको अंजीर के पत्तों में छिपाने की कोशिश की। और सत्यता में, यदि हम अपनी और अन्य किसी प्राणी की योग्यता से परमेश्वर के सामने थोड़े समय के लिए भी उपस्थित होने का प्रयास करते हैं। हम क्षण से पहले नाश हो जाएंगे। इसलिए सभी को दाऊद के साथ प्रार्थना करनी चाहिए, यहोवा तू अपने सेवक के साथ न्याय में प्रवेश मत कर, क्योंकि तेरी दृष्टि में पृथ्वी पर जीवित, कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं है।

लेख -24

मनुष्य का पवित्रीकरण और अच्छे कार्य

हम विश्वास करते हैं, कि मनुष्य में सच्चा विश्वास, परमेश्वर के वचन के सुनने और पवित्र आत्मा के कार्य से पैदा होता है, जो उसे नया करके नया मनुष्य बनाता, नया जीवन जीने में मदद और पाप के दासत्व से स्वतंत्र करता है। इसलिए यह कतई सत्य नहीं है, कि धर्मी ठहराने वाला विश्वास मनुष्य को, धार्मिकता के कार्य और पवित्र जीवन में आलसी (कर्तव्य के प्रति असावधान) बनाता है, जबकि इसके बिना वे परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होकर कुछ नहीं कर सकते, वरन् आत्मप्रेम और नाश होने के डर से ही कुछ करते हैं। इसलिए यह असम्भव है, कि यह पवित्र विश्वास मनुष्य के लिए अहितकर है। हम एक व्यर्थ विश्वास की बात नहीं करते, वरन् ऐसे विश्वास की, जिसे पवित्र शास्त्र में प्रेम द्वारा कार्य करने वाला विश्वास कहा गया है, जो मनुष्य को अच्छे कार्य जिनकी परमेश्वर ने अपने वचन में आज्ञा दी है, करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ये अच्छे कार्य जब विश्वास से प्रेरित होकर निकलते हैं, वे परमेश्वर की दृष्टि में अच्छे और स्वीकार्य हैं, उतने ही जितने वे सब, उसके अनुग्रह से पवित्र किये गये हैं। तो

भी वे हमारे धर्मी ठहराए जाने में किसी काम के नहीं, क्योंकि अच्छे कार्य करने से पहले ही हम विश्वास से मसीह में धर्मी ठहराये गये हैं। अन्यथा ये कार्य अच्छे नहीं हो सकते इससे ज्यादा कि एक पेड़ के फल अच्छे हैं। इससे पहले की पेड़ स्वयं अच्छा है।

हम इसलिए अच्छे कार्य नहीं करते हैं, कि उनसे हमें कोई लाभ हो, इतना ही नहीं अच्छे कार्य करने के लिए हम परमेश्वर के ऋणी न कि वह हमारा। यह वह ही है जो हममें इच्छा और कार्य अपनी खुशी के लिए करता है। इसलिए आओ जो वचन में लिखा है उस पर ध्यान दें ''जब तुम वह सब कर चुको जिसकी तुम्हें आज्ञा दी गयी है तो कहना हम अयोग्य सेवक हैं, हमने वही किया जो हमारे कर्तव्य थे।'' परंतु हम इस बात को अस्वीकार नहीं करते, कि परमेश्वर अच्छे काम का प्रतिफल देता है। परंतु यह उसका अनुग्रह है कि वह पुरुस्कार का मुकुट प्रदान करता है।

यद्यपि हम अच्छे काम करते हैं। हम उनमें अपना उद्धार नहीं पाते, हम अपने गन्दे शरीर (पाप) जो दण्ड योग्य है से अच्छे कार्य नहीं कर सकते और यदि हम ऐसे अच्छे कार्य करते भी, तब भी एक पाप पर्याप्त है, कि परमेश्वर उन्हें अस्वीकार कर दे। तब हम हमेशा दुविधा में बने रहेंगे और अपने विवेक में हम हमेशा दु:खी रहेंगे, यदि वे (अच्छे कार्य) हमारे उद्धारकर्ता की यातना और मृत्यु की विशेषता पर आश्रित नहीं है।

लेख -25

संस्कारी (औपचारिक) व्यवस्था का समाप्त होना

हम विश्वास करते हैं, व्यवस्था के संस्कार और चिन्ह मसीह के आने से समाप्त हो गये हैं और सभी बातें पूर्ण हो गई है। इसलिए उनका इस्तेमाल मसीहियों में समाप्त होना चाहिए, फिर भी उनकी सच्चाई और सार, यीशु मसीह में हमारे साथ बना रहता है जिसमें उन्हें परिपूर्णता मिलती है। फिर भी हम अभी भी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की गवाही इस्तेमाल करते हैं, कि सुसमाचार के सिद्धान्त में निश्चित हो और अपने जीवन को परमेश्वर की महिमा के लिए परमेश्वर की इच्छानुसार बिता सके।

लेख -26

मसीह की मध्यस्थता

हम विश्वास करते हैं, कि धर्मी यीशु मसीह, जो हमारा बिचवइया और वकील है, के बिना हम परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकते, यीशु इसलिए मनुष्य बन गया, उसने एक व्यक्ति में ईश्वरीय और मानवीय स्वभाव को संगठित किया, ताकि हम/मनुष्य ईश्वरीय महिमा में प्रवेश कर सकें, अन्यथा वहाँ पहुँचना हमारे लिए असम्भव होता। यह

बिचवइया जिसे परमेश्वर ने अपने और हमारे बीच नियुक्त किया है, किसी भी प्रकार से अपनी महिमा (गौरव) से हमें भयभीत नहीं करता, न ही हमें, अपनी कल्पना से दूसरे किसी की खोज करने को कहता है। स्वर्ग और पृथ्वी पर अन्य कोई नहीं जो हमें यीशु मसीह से ज्यादा प्रेम करता हो, जो परमेश्वर होते हुए उसने अपने आप को शून्य कर दिया और मनुष्य की समानता में हो गया और हमारे लिए दास का स्वरूप धारण किया और सभी बातों में अपने भाइयों (हमारे) जैसा हो गया। यदि तब हम किसी अन्य बिचवइया की खोज करें, जिसका झुकाव हमारे पक्ष में हो, कौन ऐसा है, जो हमसे उससे ज्यादा प्रेम करे, जिसने हमारे लिए, जब हम उसके दुश्मन ही थे, हमारे लिये अपने प्राणों को दे दिया और यदि हम ढूंढे तो कौन ऐसा है? जिसके पास सामर्थ और पवित्रता है जो परमेश्वर के दाहिने बैठा है और जिसे पृथ्वी और स्वर्ग का सारा अधिकार दिया गया है। और किसकी परमेश्वर के, अपने लिये बेटे से, पहले सुनी जाएगी?

इसलिये सिर्फ अविश्वास की वजह से आदर के स्थान पर संतों का अनादर की रीति प्रारम्भ हुई कि उन्होंने वह किया जो अनावश्यक न था, परंतु इसके विपरीत अपने कर्तव्य के आधीन धैर्य के साथ इसे अस्वीकार किया, जैसा उनके लेखन से प्रतीत होता है। ऐसा भी नहीं है कि हम अपनी अयोग्यता के लिए प्रार्थना करें, इसका मतलब ये नहीं है कि हम अपनी प्रार्थना परमेश्वर को अपनी योग्यता के आधार पर प्रस्तुत करे, परंतु प्रभु यीशु मसीह की योग्यता और उत्तमता के आधार पर जिसकी धार्मिकता, विश्वास से हमारी हो जाती है।

इसलिए हमसे, इस डर और अविश्वास को दूर करने के लिये प्रेरित सत्य ही कहते हैं कि यीशु मसीह सभी बातों में हमारे समान बना, कि वह करुणामयी और विश्वास योग्य महायाजक बने, और लोगों के पापों का प्रायश्चित करे, जिसमें उसने स्वयं परीक्षा की यातना सही और इस योग्य है, कि जो परीक्षा में पढ़ते हैं, उनकी मदद करे। और हमें अपने पास आने के लिए उत्साहित करने के लिए कहता है, ''जबकि हमारे पास ऐसा महायाजक है जो स्वर्ग में है यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, तो आओ हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। हमारा महायाजक ऐसा नहीं है, जो हमारी कमजोरियों का अनुभव न रखता हो, परंतु वह हमारे समान परखा गया है और फिर भी पाप रहित है। इसलिये आओ साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जाएं, कि हम करुणा और जरूरत के समय मदद के लिये अनुग्रह प्राप्त करें। प्रेरित कहता है-जबकि यीशु मसीह के खून से हमें पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस है, तो आओ हम सच्चे हृदय में विश्वास से उसके पास जाएं। उसी प्रकार मसीह का याजकीय गुण अपरिवर्तनीय है, जिससे वह जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, उन्हें पूर्णता बचाने में सक्षम है। इस बात को जानते हुए कि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करता है।

और क्या चाहिए ? जबकि मसीह ने स्वयं कहा है, ''मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ, बिना मेरे कोई परमेश्वर तक नहीं पहुँच सकता'', तब हमें किस उद्देश्य के लिए दूसरे वकील की आवश्यकता है, जबकि परमेश्वर ने अपने बेटे को ही एक वकील के रूप में दे दिया है। आओ हम उसे त्यागे नहीं, कि दूसरे को ले अथवा एक के बाद एक को, खोजते रहे, और कभी इस योग्य न हों, कि उसे पा सके। परमेश्वर अच्छी तरह जानता था, कि जब उसने उसे (बेटे) दिया, हम पापी ही थे।

इसलिए मसीह की अज्ञानुसार हम मसीह यीशु एकमात्र बिचवइया के द्वारा स्वर्गीय पिता को पुकारते हैं जैसा कि हमने प्रभु की प्रार्थना में सीखा है और आश्वस्त रहते हैं, कि जो कुछ भी हमने पिता से उसके नाम से मांगा पूरा होगा।

लेख -27

विश्व व्यापक मसीही कलीसिया

हम एक विश्वव्यापक कलीसिया में विश्वास और अंगीकार करते हैं। जो सच्चे मसीहीयों, विश्वासिों की पवित्र सभा है। सभी अपने मसीह में अपने उद्धार की आशा, उसके लहू द्वारा, साफ और पवित्र होकर, पवित्र आत्मा द्वारा प्रमाणित किये गये हैं। यह कलीसिया संसार के प्रारंम्भ से हैं और उन्त तक रहेगी। जो इस बात से प्रगट होती है, कि मसीह अनन्तकालीन राजा हैं। जो बिना प्रजा के नही हो सकता। और यह पवित्र कलीसियों परमेश्वर द्वारा, पूरे संसार की उग्रता के विरूद्व सुरक्षा और मदद प्राप्त करती है। यद्यपि कई बार कुछ समय के लिये, बहुत छोटी प्रतीत होती हैं। और मनुष्य की दृष्टि में कुछ नही हैं। जैसे कि अहाब के क्रूर शासनकाल में, प्रभु ने अपने लिए सात हजार मनुष्यों को जिन्होंने बालदेवता के आगे अपने घुटने को नहीं झुकाया सुरक्षित रखा। और यह पवित्र कलीसिया एक निश्चित स्थान अथवा कुछ लोगो में ही सीमित नही हैं। परन्तु यह पूरे संसार में फैली हैं। और फिर भी एक ही आत्मा और विश्वास की सामर्थ द्वारा ह्रदय और इच्छा में जुड़ी और संगठित हैं।

लेख -28

सभी विश्वासियों के लिए जरूरी है, कि वे अपने आपको सच्ची कलीसिया में जोड़े

हम ये विश्वास करते हैं, जबकि यह पवित्र सभा उन लोगों की है, जिन्होंने उद्धार पाया है। और इसके बाहर उद्धार नही है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कही का, कैसी भी स्थिति का है, उसे स्वयं को इससे अलग नही करना चाहिए, न वह अपने आपमें सन्तुष्ट हो परन्तु सभी मनुष्य का कर्तव्य है और वे इसमें जुड कर संगठित होने के लिए बाध्य

हैं। कलीसिया की एकता का बनाए रखने के लिए, उसके सिद्धान्त और अनुशासन की आधीनता के लिए, यीशु मसीह के जुए के नीचे अपनी गर्दन झुकाने के लिए और एक ही शरीर के सदस्यों के रूप में, भाइयों की बढ़ोत्तरी के लिए, परमेश्वर के दिये गये गुणों के अनुसार सेवा करते हुए, संगठित रहें। इसे और अधिक प्रभावशाली ढंग से पूरा करने के लिए परमेश्वर के वचन के अनुसार, यह सभी विश्वासियों का कर्तव्य है कि वे अपने आपको, उनसे जो कलीसिया में नही हैं, अलग करे, और अपने आप को इस सभा में जोड़े, जहाँ भी परमेश्वर ने इसे स्थापित किया है। तब भी जबकि न्यायाधीश और राजाओं की आज्ञा इसके विरुद्ध हो, चाहे मृत्यु का दुःख अथवा शारिरिक दण्ड ही क्यों न सहना पड़े,

इसलिए वे सब जो अपने आपकों इससे (कलीसिया) अलग करते अथवा इसमें शामिल नही होते, वे परमेश्वर के नियम के विरूद्ध जाते हैं।

लेख -29

सच्ची कलीसिया के चिन्ह, और इसकी झूठी कलीसिया से भिन्नता

हम विश्वास करते है कि हमे बड़ी सर्तकता और सावधानी से परमेश्वर के वचन के आधार पर निर्णय करना है कि कौन सी सच्ची कलीसिया हैं। जबकि संसार में सभी सप्रदाय अपने आपको कलीसिया कहते (समझते) हैं। लेकिन हम यहाँ पर दिखावे के लिए, जो कलीसिया में स्वार्थ के साथ मिश्रित हो गये हैं। फिर भी कलीसिया नहीं है, यद्यपि बाहरी स्वरूप ऐसा लगता है। वरन् हम कहते की सच्ची कलीसिया का स्वरूप और सहभागिता अन्य सभी सप्रदाय से जो अपने आपको कलीसिया कहते हैं, अलग होना चाहिए।

वे चिन्ह जिनसे सच्ची कलीसिया की पहचान होती है:-

यदि उसमें सुसमाचार के शुद्ध सिद्धान्त प्रचार किये जाते हैं। यदि संस्कारों का प्रबन्धन जैसा मसीह ने नियुक्त किया है, के अनुरूप होता है, यदि कलीसिया का अनुशासन पाप को दण्डित करता है, संक्षेप में यदि सभी बाते परमेश्वर के वचन के अनुसार होती हैं। और जो वचन के विरुद्ध है, उसे अस्वीकार किया जाता है। और यीशु मसीह को कलीसिया का सिर (मुखिया) माना जाता है। इसलिए सच्ची कलीसियों को पूर्ण निश्चयता के साथ जानना आवश्यक है, जिससे अलग होने का अधिकार किसी मनुष्य (विश्वासी) को नहीं है।

वे जो कलीसिया के सदस्य है। उन्हें मसीहत के चिन्ह से जाना जा सकता है। विशेषकर विश्वास से-जब वे यीशु मसीह को एक मात्र उद्धार कर्ता स्वीकार करते हैं। वे पाप छोड़ देते, धार्मिकता में बढ़ते, सच्चे परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करते है।

विश्वास से अलग नही होते, और अपने कार्यो शरीर/पाप को क्रूस पर चढ़ाते हैं। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि उनमें कोई कमजोरी नहीं रह जाती, परन्तु वे इसके विरूद्ध आत्मा की सामर्थ से पूर्ण जीवन संघर्ष करते हैं। और हमारे प्रभु यीशु मसीह का खून, मृत्यु, यातना और आज्ञाकारिता में सहारा लेते है, जिसमें उन्हें उस विश्वास के द्वारा पापों से छुटकारा (प्रायश्चित) प्राप्त हुआ है।

झूठी कलीसियाओं में- कलीसियाएं वचन से ज्यादा सामर्थ और अधिकार, अपने नियम को देते है। और अपने आपको मसीह के जुए के आधीन नही करती, न ही संस्कारों को जैसा की वचन में मसीह ने ठहराया के अनुसार प्रबन्धन करते है। और अपनी सुविधा के अनुसार इनमें कम, ज्यादा करती है। ये मसीह से ज्यादा मनुष्यों पर आश्रित होती है। और उन्हें सताती है, जो परमेश्वर के वचन के अनुसार पवित्र जीवन जीते हैं और उन्हें (कलीसिया) को उसकी गलती, लालच और मूर्ति पूजा के लिए प्रताड़ित करते है। ये दो कलीसियाएं आसानी से पहचानी और एक दूसरे से अलग की जाती है।

लेख -30

कलीसिया का शासन और इसके कार्य (पद)

हम विश्वास करते हैं, कि सच्ची कलीसिया-आत्मिक व्यवस्था (नियमों) से जो प्रभु ने अपने वचनों में सिखाए, से शासित होनी चाहिए। विशेषकर उसमें सेवक अथवा पादरी होने चाहिए, जो परमेश्वर का वचन और संस्कारों का प्रबन्धन कर सकें और प्राचीन और धर्म सेवक जो पादरी के साथ, कलीसिया की समिति का गठन कर सकें, होने चाहिए, कि इनके द्वारा सच्चा धर्म सुरक्षित रह सके और सच्चे सिद्वान्त, शिक्षा सब जगह प्रचारित हो सके, इसे तोड़ने वाल दण्डित हो सके और आत्मिक माध्यम (साधन) से वचिंत किए जाए। और गरीब और प्रताड़ित को सहारा और तसल्ली उनकी जरूरत के अनुसार दी जा सकें, इस प्रकार सभी कुछ कलीसिया में अच्छी प्रकार से किया जाएगा, जब विश्वास योग्य मनुष्य उन नियमों के आधार पर चुने जाएगें, जिसे पौलूस ने तिमुथियुस के पत्र में लिखा है।

लेख -31

सेवक, प्राचीन और धर्म सेवक

हम विश्वास करते हैं, कि परमेश्वर के वचन के सेवक, प्राचीन और धर्म सेवक, उनके पदों के लिए कलीसिया द्वारा उचित चुनाव कराकर, प्रभु का नाम लेते हुए, जो परमेश्वर का वचन सिखाता है, उसके अनुसार उन्हें चुना जाना चाहिए। इसलिए हर कोई

इस बात का ध्यान रखे कि वह अपने आपको अनुचित साधन से इसमें शामिल न करें। वरन् तब तक प्रतीक्षा करें, जब तक परमेश्वर उसे न बुलाए। कि उसके पास उसके बुलाहट की गवाही हो और निश्चयता का आश्वासन हो, कि यह परमेश्वर की ओर से है।

परमेश्वर के वचन के सेवकों के पास समानता में समार्थ और अधिकार है, चाहे वे जहाँ भी है। वे सभी मसीह जो एक मात्र विश्वव्यापी अध्यक्ष और कलीसिया का सिर (मुखिया)है, के सेवक है।

तो भी ताकि परमेश्वर का पवित्र नियम तोड़ा अथवा इसकी अवहेलना न हो, हम कहते है। सभी विश्वासियों को परमेश्वर के वचन के सेवको और प्राचीनों को, उनके कार्य के लिए ऊँचा स्थान और सम्मान देना चाहिए, और उनके साथ बिना कुड़कुड़ाहट, कलह, विवाद के जितना भी सम्भव है, शान्ति से रहना चाहिए ।

लेख -32

कलीसिया का अनुशासन और व्यवस्था

हम इस बात में विश्वास करते है, यद्यपि यह अच्छा और लाभकारी है, कि जो कलीसिया के अधिकारी है, और कुछ नियम कलीसिया की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए स्वयं बनाते हैं। तो भी उन्हें वचन का अध्ययन करते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए, कि वे उन बातों को अनदेखा और अलग न करें, जो मसीह ने स्थापित/नियुक्त की है। और इसलिए हम मनुष्य द्वारा रचित सभी व्यवस्था, जो मनुष्य, परमेश्वर की आराधना के लिए बताते है अस्वीकार करते है। इसलिए हम सिर्फ उन बातों जो पोषण, मेल और एकता को सुरक्षित रखती है, और सभी मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञा मानने को कहती है। स्वीकार करते है। इस उद्देश्य के लिए बहिष्कार करना और कलिसिया में अनुशासन आवश्यक है। जो परमेश्वर के वचन अनुसार, सभी इसमें शामिल हैं।

लेख -33

संस्कार

हम इस बात में विश्वास करते है, कि अनुग्रहकारी परमेश्वर ने हमारी कमजोरी और पापों को जानते हुए, संस्कारों को हमारे लिये नियुक्त किया है। जिससे वह अपने वायदो को और उसकी भलाई और अनुग्रह को, हमारे लिए प्रतिज्ञा करता है। और इनसे हमारे विश्वास को पोषण और दृढ़ता प्रदान करता है। जिसे उसने सुसमाचार के वचन से जोड़ा है। कि हम अपने विवेक में उसे अच्छी तरह से, जो वह हमसे वचन में घोषित करता और हमारे ह्रदय में कार्य करता है। समझ सकें, जिससे वह उस उद्धार को जो हमें दिया

है। उसे सुदृढ़/पुष्टि करता है। वे सदृश्य चिन्ह और प्रमाण है, आन्तरिक और अदृश्य बातों का जिसे परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा की सामर्थ से हममें कार्य करता है। इसलिए चिन्ह अर्थहीन नहीं कि हमें धोखा दे, यीशु मसीह सच्चा पात्र है, जो उनमें उपस्थित होता है। जिसके बिना उनका मूल्य नही है।

हम संस्कार, जो मसीह ने नियुक्त किये उनकी संख्या से सन्तुष्ट होते, जो मात्र दो है।-बपतिस्मे और प्रभुभोज का संस्कार।

लेख -34

पवित्र बपतिस्मा

हम विश्वास करते है, कि यीशु मसीह जो व्यवस्था का अन्त है। उसने अपने लहू को बहाकर, अन्य सभी लहू बहाने को, जो मनुष्य अपने पापों के लिए बहाता या बहाएगा उन्हें समाप्त कर दिया, और उसने खतने को जो लहू से होता था, के स्थान पर बपतिस्में के संस्कार को प्रारम्भ किया, जिससे हम, सभी मनुष्यों से और अनुचित धर्म से अलग होकर परमेश्वर की कलीसिया में शामिल होते हैं। कि हम पूरे उसके हो जाए। जिसका चिन्ह और ध्वज हम अपने ऊपर लेते हैं, जो इस बात की गवाही है कि वह हमेशा हमारा अनुग्रकारी परमेश्वर और पिता रहेगा।

इसलिए उन सभी को जो उसके है, आज्ञा दी है, कि शुद्व पानी से पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से वपतिस्मा लो, जो इस बात का प्रतीक है। जैसे पानी शरीर की गन्दगी धोता है जब ऊपर डाला जाता है, और बपतिस्मा लेने वाले के शरीर पर नज़र आता है। जब इसे छिड़का जाता है। उसी प्रकार पवित्र आत्मा की सामर्थ से मसीह के खून का आत्मा पर छिड़काव होता है। वह पाप से शुद्ध करता है, और हमें क्रोध की सन्तान से बदल कर परमेश्वर की सन्तान बना देता है। ऐसा बाहरी पानी के प्रभाव से नही होता, वरन् परमेश्वर के पुत्र के बहुमूल्य खून के छिड़काव से होता है। जो हमारा लाल समुद्र है। जिससे हमारा गुजरना आवश्यक है, कि फिरौन की क्रूरता, जो शैतान है से बच सके, और आत्मिक कनान में प्रवेश करे।

इसलिए सेवक संस्कार का प्रबन्ध (देते) करते हैं, जो की सदृश्य है। परन्तु हमारा प्रभु वह देता है। जो संस्कार का प्रतीक है, का गुण और अदृश्य अनुग्रह हमारी आत्मा को अधार्मिकता की गन्दगी से धोता साफ, शुद्ध करता है। हमारे हृदय को नया बनाता और उसे सभी तसल्ली से भरता है। हमें उसके भलाई का सच्चा आश्वासन देता है। और हमारे पुराने मनुष्यत्व और उसके कार्य को समाप्त कर, हमें नया मनुष्यत्व प्रदान करता है।

इसलिए हम विश्वास करते हैं, हर एक मनुष्य जिसने सच्चाई से अनन्त जीवन पाया है, बपतिस्मे को एक बार अवश्य लेना चाहिए, और इसे कभी दोहराना नही चाहिए क्योंकि हम दो बार जन्म नहीं ले सकते, इस बपतिस्मे के फायदा का लाभ सिर्फ उस समय ही नहीं होता जब पानी का छिड़काव होता है। परन्तु पूरे जीवन काल में इसका महत्व होता है।

इसलिए हम Anabaptist की गलत शिक्षा का घृणित मानते है। जो एक बपतिस्मे से जिसे उन्होने लिया है। संतुष्ट नहीं होते और विश्वासीयों के बच्चों के बपतिस्मों को गलत बताते है। जो हम विश्वास करते और मानते है। कि उन्हे बपतिस्मा और वाचा के चिन्ह का प्रमाण देना चाहिए, जैसे पहले इस्राइल में बच्चों का खतना उसी वायदे के अनुरूप होता था। और मसीह ने अपने लहू को जितना बड़ों के लिए उतना ही विश्वासियों के बच्चों के लिए भी बहाया, इसलिये जो मसीह ने उनके लिए किया उसका चिन्ह और संस्कार उन्हें देना चाहिए। जैसे कि व्यवस्था में प्रभु ने आज्ञा दी कि जन्म के कुछ समय पश्चात उन्हें मसीह के दु:ख और मृत्यु के संस्कार में एक मेम्ने को देने के द्वारा जो यीशु मसीह का एक संस्कार था, में शामिल करना चाहिए, और जो खतना यहूदियों के लिये था वही बपतिस्मा हमारे बच्चों के लिये है। इसी वजह से पौलुस बपतिस्में को मसीह का खतना कहता है।

लेख -35

प्रभु यीशु मसीह का पवित्र भोज

हम विश्वास और अंगीकार करते है, कि हमारे उद्वार कर्ता प्रभु यीशु मसीह ने पवित्र भोज के संस्कार को नियुक्त और प्रारम्भ किया कि, जिन्हे उसने नया करके अपने परिवार जो की कलीसिया है, में शामिल कर लिया है। उन्हे पोषण और सहायता प्रदान करें। अब जिन्होंने नया जन्म पाया है, उनमें दो जीवन है। एक सांसारिक और अस्थायी जिसे उन्होंने पहले जन्म से पाया है, जो सभी मनुष्यों में सामान्य है। और दूसरा आत्मिक और स्वर्गीय जीवन जो उन्हें दूसरे जन्म से, जो कि सुसमाचार के वचन से मसीह के शरीर की संगति में आने से प्राप्त होता है। और यह आत्मिक जीवन सामान्य नहीं है। वरन् परमेश्वर के चुने हुओ के लिए ही है, उसी प्रकार परमेश्वर ने शारीरिक और सांसारिक जीवन के लिए सामान्य रोटी जो आवश्यक है और सभी मनुष्य के लिए सामान्य है। परन्तु विश्वासियों के स्वर्गीय और आत्मिक जीवन के लिए, उसने जीवन की रोटी को स्वर्ग से भेजा जो कि यीशु मसीह है। जो विश्वासियों के आत्मिक जीवन को पोषित और ताकत देती है, जब वे इसे खाते है। जिसका मतलब कि जब वे उसे विश्वास से आत्मा में स्वीकार करते हैं।

इसके लिए, कि वह हमारे लिए आत्मिक और स्वर्गीय रोटी को प्रस्तुत कर सके, मसीह ने अपने शरीर के संस्कार के लिए सांसारिक और सदृश्य रोटी और दाखरस को अपने लहू के संस्कार के लिये नियुक्त किया, कि उनसे हममें वह निश्चयता, जैसे हम इन संस्कार को हाथ में पकड़ते, और अपने मुंह से खाते और पीते है। जिससे हमारे जीवन पोषित होते है। उसी निश्चयता के साथ हम विश्वास से, (जो कि हमारी आत्मा का हाथ और मुँह है) हमारे एकमात्र उद्धारकर्ता के सच्चे शरीर और रक्त को, अपने आत्मिक जीवन की बढ़ोत्तरी के लिए अपनी आत्मा में स्वीकार करते हैं। अब जिस प्रकार यह निश्चित और हर शक, (दुविधा) से परे है। कि यीशु मसीह ने उसके संस्कार के इस्तेमाल की आज्ञा हमें व्यर्थ ही नहीं दी, इसलिए वह हममें वह सब करता है। जो इन पवित्र चिन्हों के द्वारा प्रस्तुत होते है। यद्यपि यह बात हमारी समझ से परे है। और हम इसे समझ नही सकते, क्योंकि पवित्र आत्मा के कार्य छिपे और हमारी समझ से बाहर है। इसलिए हम कोई गलती नही करते जब कहते है। कि जो हमने खाया और पिया वह मसीह का स्वाभाविक शरीर और रक्त है। परन्तु जिस प्रकार हम इसमें शामिल होते है। वह मुंह से नही वरन आत्मा से विश्वास के द्वारा, तब यद्यपि मसीह स्वर्ग में हमेशा अपने पिताजी के दाहिने बैठा है। फिर वह हमें विश्वास से अपने साथ शामिल करना समाप्त नही करता। यह पर्व एक आत्मिक मेज है। जिसमे मसीह अपने आपके और अपने सभी फायदे हमें देता है और हमारे आनन्द के लिए अपने आपको और अपने दु:खों और मृत्यु के गुणों को हमें देता है। और हमारी अशान्त आत्मा को उसके शरीर में खाने से, पोषण, शक्ति और तसल्ली देता है। और उसके लहू को पीने से हमें उत्साहित और तरोताजा करता है।

यद्यपि संस्कार, इससे जुड़ी बातों का प्रतीक है। तो भी यह सभी मनुष्य द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता, अधर्मी इसे अपने ऊपर दोष लाने के लिए स्वीकार करते हैं। परन्तु संस्कार की सत्यता को नहीं ग्रहण करते, जैसे यहूदा और जादू-टोना करने वाला साइमन, दोनों ने संस्कार ग्रहण किया, परन्तु यीशु मसीह जो इनमें प्रतीक है ग्रहण नहीं किया, जिसमें सिर्फ विश्वासी शामिल किये जाते है। आखिरी बात हम इस संस्कार को परमेश्वर के लोगों की सभा में दीनता, आदर, हमारे उद्धारकर्ता मसीह की मृत्यु को याद करते हुए, धन्यवाद के साथ, अपने विश्वास और मसीह धर्म का अंगीकार करते हुए इसे ग्रहण करते है। इसलिए यदि कोई बिना अपने आपको जांचे परखे, इस मेज में रोटी खाता और प्याले से पीता है। वह अपने लिये न्याय को खाता पीता है। एक शब्द में, हम इस संस्कार में शामिल होने से परमेश्वर और अपने पड़ोसी के साथ, उत्साही प्रेम में आगे बढ़ते है।

इसलिए हम मनुष्य रचित सभी मिश्रणों को जो इस संस्कार में जोड़े गये हैं। अस्वीकार करते हैं, और दृढ़ता से जैसे मसीह और उसके प्रेरितों ने सिखाया, उसमें सन्तुष्ट होते हैं। और इसके विषय में जैसा उन्होने (यीशु और प्रेरितों) कहा है, हम कहते हैं।

लेख -36

न्याय सम्बन्धी बाते (नागरिक शासन)

हम विश्वास करते हैं, मनुष्य के पतन के कारण परमेश्वर ने राजा, अधिकारी और न्यायाधीश नियुक्त किये हैं, कि संसार पर शासन, निश्चित व्यवस्था और नियमों से हो, कि मनुष्य का दुराचार (बुरी बातों) को रोका जा सके और उनके बीच सभी बातें अच्छे नियम और शिष्टाचार के साथ हो, इस उद्देश्य के लिए उसने न्यायालय को बुरा करने वाले को दण्ड और भले लोगों की सुरक्षा के लिए अधिकार (तलवार) दिया है।

उनके कार्य सिर्फ नागरिक राज्य की खुशहाली और सम्पन्नता का ख्याल रखने के लिये ही नहीं है। पवित्र सेवा की सुरक्षा भी कि मसीह का राज्य फैलाया जा सके, इसलिए उन्हें सुसमाचार के वचन के प्रचार को समर्थन देना है, कि जैसे परमेश्वर ने अपने वचन में आज्ञा दी उसका आदर और आराधना सब कर सकें।

फिर भी यह हर एक व्यक्ति चाहे वह कहीं का भी, कैसी ही योग्यता का, और स्थिति का है। उसका कर्तव्य है, कि वह न्यायधीशों के आधीन रहे, और कृतज्ञाता के लिए उन्हें सम्मान और आदर दें, और हर बात में जो वचन के विरुद्ध नहीं है, उनकी आज्ञा मानें, और उनके लिए प्रार्थना करें, ताकि परमेश्वर उन्हें शासित और उनके हर कार्यों में अगुवाई करे, और ताकि हम सभी भलाई के साथ, शांति का जीवन जी सके।

इसलिए हम उन सभी लोगों से नफरत करते हैं, जो न्यायाधीशों के ऊँचे अधिकारों की अवहेलना करते हैं और न्याय को नहीं मानते, और शिष्टाचार और भले नियमों में गड़बड़ी पैदा करते हैं, जो परमेश्वर ने मनुष्यों के बीच स्थापित किये हैं।

लेख -37

अन्तिम न्याय

अन्तत: हम परमेश्वर के वचन के अनुरूप विश्वास करते हैं, कि जब प्रभु द्वारा ठहराया (नियुक्त) (जो सभी प्राणियों के लिए अनजान है) वक्त आएगा और चुनो हुओं की संख्या पूरी हो जाएगी। हमारा प्रभु यीशु मसीह स्वर्ग से शारीरिक और सदृश्य जैसे व स्वर्ग में चढ़ा था, वैसे ही-बड़ी महिमा और गौरव के साथ अपने आपको, मृतकों और जीवितों का न्यायी घोषित करते हुए, इस संसार को आग और लपटों से शुद्ध करने के

लिए आएगा।

तब सभी मनुष्य, पुरुष, स्त्री और बच्चे जो जगत की उत्पत्ति से लेकर अन्त तक हुए हैं, इस महान न्यायधीश के सामने उपस्थित होंगे, उन्हें प्रधान स्वर्गदूत की और परमेश्वर की तुरही की आवाज से इकट्ठा किया जाएगा। सभी मृतक पृथ्वी से जी उठेंगे और उनकी आत्मा उनके शरीर से जुड़ जाएगी और जो जीवित होंगे वह अन्य (दूसरों) के समान मरेंगे नहीं, परंतु पलक झपकते ही नाशवान से अविनाशी अवस्था में परिवर्तित हो जाएंगे, तब पुस्तकें, (जिसे विवेक कहते हैं) खोली जाएगी और मृतकों का जो अच्छा या बुरा उन्होंने संसार में किया है, के अनुसार उनका न्याय होगा। तब सभी मनुष्य हर एक बेकार शब्द जो उन्होंने बोला है, जिसे संसार ने मनोरंजन और मजाक समझा था, का हिसाब देंगे, और फिर मनुष्य की गुप्त बातें, काम और दिखावा सभी मनुष्य के सामने प्रगट हो जाएगा।

और इसलिये बुरे और अधर्मी के लिए यह न्याय, डरावना और भयानक होगा, परंतु चुने हुओ और धर्मियों के लिए चाह रखने वाला और तसल्ली देने वाला होगा, क्योंकि तब उनका पूर्ण छुटकारा सिद्ध होगा, और तब वे अपने परिश्रम और परेशानियों का प्रतिफल पाएंगे। उनकी निर्दोषता सभी मनुष्यों के सामने प्रगट होगी और वे परमेश्वर के क्रोध और बदले को अधर्मी पर देखेंगे, जिन्होंने उनको संसार में अति क्रूरता से सताया और पीड़ा दी थी, वे अपने विवेक की गवाही से दोषी ठहरेंगे और उस आग में जो शैतान और उसके दूतों के लिए बनायी गई है, उस आग में पीड़ा सहने के लिए अविनाशी बनाए जाएंगे।

परंतु विश्वास योग्य और चुनो हुओ को महिमा और सम्मान का मुकुट पहनाया जाएगा और परमेश्वर का पुत्र अपने पिता परमेश्वर और उसके चुने हुए स्वर्ग दूतों के सम्मुख उनका नाम पुकारेगा, उनकी आँखों से सभी आँसू पोछ डाले जाएंगे और उन्हें जिन्हें अभी कई न्यायाधीश दुष्ट और अधर्मी कहकर दोष लगाते हैं। वे अब परमेश्वर के पुत्र होंगे और एक अनुग्रहकारी पुरुस्कार के लिए, प्रभु उन्हें ऐसी महिमा से लिप्त करेगा जिसकी कभी मनुष्य के हृदय ने कल्पना भी नहीं की थी।

इसलिए हम उस महान दिन का इन्तजार बड़े उत्साह से करते हैं, कि हम मसीह यीशु हमारे प्रभु में परमेश्वर के वायदों का पूर्णता आनन्द मना सके।

●

HEIDELBERG CATECHISM (प्रश्नावली)

हमारे सिद्धान्तों का दूसरा मानक प्रश्नावली है, इस Heidelberg प्रश्नावली कहा जाता है, क्योंकि यह Heidelberg जर्मन Electorate की राजधानी में Elector, Fredrick III के आदेश पर तैयार की गयी, ताकि कालविन का सुधार वहाँ फैल सके, परिणाम स्वरूप एक नयी प्रश्नावली Elector की मान्यता पाकर कालविन के लेखों को इकट्ठा करके 1563 में प्रकाशित हुई।

नीदरलैण्ड में Heidelberg प्रश्नावली, तत्काल Petru Denthenas के प्रयास जिसने इसे Dutch भाषा मं अनुवादित किया (1566) में प्रभावित होकर स्वीकार की गई, 1566 में Peter Gabrel ने Amsterdam में कलीसिया के सामने इसकी व्याख्या की। 16वीं शताब्दी में National Synod ने इसे स्वीकार कर लिया। सभी सेवकों को इसे अपनाना और कलीसिया में इसकी व्याख्या आवश्यक हो गयी, Synod of Dort ने 1618-19 से लेकर, अब तक इसे मसीह संशोधित कलीसियाओं में लागू रखा है।

आज भी Heidelberg प्रश्नावली साधारणत: सभी संशोधित कलीसियों द्वारा स्वीकार की जाती है।

- - -

HEIDELBERG CATECHISM (प्रश्नावली)

प्रभु का दिन - I

प्रश्न 1 : जीवन और मृत्यु तुम्हारी एकमात्र तसल्ली क्या है?

उत्तर : यह, कि मैं शरीर और आत्मा में, जीवन और मृत्यु दोनों में अपना स्वयं का नहीं वरन् अपने विश्वास योग्य उद्धारकर्ता यीशु मसीह का हूँ, जिसने अपने बहुमूल्य रक्त से मेरे पापों की पूरी कीमत चुकायी और मुझे शैतान की सामर्थ से छुटकारा दिलाया है, और मुझे सुरक्षित रखता है, कि बिना मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा से, मेरे सिर का एक बाल भी नहीं झड़ (गिर) सकता। हाँ ये सभी बातें मेरे उद्धार में अति सहायक (उपयोगी) हैं, जिससे वह अपनी पवित्र आत्मा से, मुझे अनन्त जीवन के लिए आश्वस्त करता और मुझे उसके लिए जीने के लिए इच्छा देता और तैयार करता है।

रोमियो - 14.8, I कुरि-6:19,
I कुरि. - 3.23, तीतुस - 2:14
I पतरस - 1:18, 19, I यूहन्ना - 1:17, 2:2, 12

इब्रा. 2:14, । यूहन्ना- 3:8, यूहन्ना - 8:34-36,
यहून्ना, 6:39, 10:28, 29 ॥ थिस 3:3, । पतरस 1:5
मत्ती - 10.30, लूका 21:18, इफि-1:14, रोमि-8:16,
रोमि. - 8.28, ॥ कुरि.-1:22, 5:5, रोमि -8:14, । यूह-3:3

प्रश्न 2 : तुम्हें कितनी बातों को जानना आवश्यक है, कि तुम इस तसल्ली में आनन्द से जी और मर सको?

उत्तर : तीन बातें- पहली - मेरे पाप और दु:ख कितने बड़े हैं दूसरी-मैं कैसे अपने पाप और दु:खों से छुड़ाया गया हूँ, तीसरी-मैं परमेश्वर को इस छुटकारें के लिए कैसे धन्यवाद देता हूँ।

मत्ती - 11:28, इफि. 5:8,
यूहन्ना - 9:41, मत्ती-9:12 रोमि. 3:10,
। यूहन्ना - 1:9, 10
यूहन्ना - 17:3, प्रेरि. 4:12, 10:43
इफि . 5:10, भज - 50:14
रोमि - 6:13, ॥ तिमु - 2:15

पहला भाग
पाप और दु:ख
प्रभु का दिन - II

प्रश्न 3 : कहाँ से तुम्हें अपने दु:ख का पता चलता है?

उत्तर : परमेश्वर की व्यवस्था से।

रोमियो - 3:20

प्रश्न 4 : परमेश्वर की व्यवस्था हमसे क्या चाहती है ?

उत्तर : यीशु मसीह सारांश में इसे सिखाते हैं, मत्ती : 22:37-40, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर, यही बड़ी और प्रमुख आज्ञा है और इसी के समान दूसरी यह है, तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर, यही दो आज्ञाएं सम्पूर्ण व्यवस्था और नबीयों का आधार है।''

व्यवस्था - 6:5, लैव्य. 19:18, मर-12:30, लूका : 10:27

प्रश्न 5 : क्या तुम इन्हें पूर्ण (सिद्धता) से पूरा कर सकते हो ?

उत्तर : किसी भी तरह से नहीं। वरन् स्वभाव से मैं परमेश्वर और अपने पड़ोसी से घृणा करता हूँ।

रोमि. - 3:10, 20, 23, । यूहन्ना - 1:8,10, रोमि - 8:7, इफि - 2:3, तीतुस -3:3, उत-6:5, 8:21, यिर्म-17:9, रो.-7:23

प्रभु का दिन - III

प्रश्न 6 : तो क्या परमेश्वर ने मनुष्य को इतना भ्रष्ट, तर्क रहित और पतित बनाया?

उत्तर ' किसी भी तरह नहीं ! वरन् परमेश्वर ने मनुष्य को अच्छा और अपनी समानता, सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में बनाया, कि वह अपने सृष्टिकर्ता परमेश्वर को जान सके, हृदय से प्रेम कर सके और उसके साथ अनन्त आशीषों में रहते हुए उसकी स्तुति और महिमा कर सके।

उत : 1:26, 27, 31, इफि - 4:24, कुलु -3:10, II कुरि - 3:18

प्रश्न 7 : फिर मनुष्य का भ्रष्ट (पतित) स्वभाव कहाँ से आता है ?

उत्तर : ऐदेन की वाटिका में हमारे आदि माता पिता की अनाज्ञाकारिता और पतन के द्वारा, जिससे हमारा स्वभाव इतना दूषित हो जाता है कि हम सभी पाप में गर्भधारण और जन्म लेते हैं।

उत - 3, रोमि 5:12, 18,19, भज - 5:15, उत-5:3

प्रश्न 8 : क्या हम इतने भ्रष्ट हो गये हैं, कि कुछ भी अच्छा नहीं कर सकते ? और बुराई की तरफ हमारा झुकाव सदा रहता है?

उत्तर : हां ! यह सत्य है। जब तक कि हम परमेश्वर की आत्मा द्वारा फिर से नये नहीं किये जाते।

उत-6:5, 8:21, अय-14:4, 15:14, 16:35, यूह-3:6, यशा-53:6 यूह-3:3, 5:1, 1 कुरि - 12:3, II कुरि. 3:5

प्रभु का दिन - IV

प्रश्न 9 : क्या तब परमेश्वर गलती करता है, मनुष्य को ऐसी व्यवसथा देकर जिसे वह पूरा नहीं कर सकता ?

उत्तर : नहीं ! कदापि नहीं, परमेश्वर ने मनुष्य को इस योग्य बनाया, कि वह इसे (व्यवस्था) को पूरा कर सके, परंतु मनुष्य शैतान के बहकावे में आकर अपनी स्वेच्छा की अनाज्ञाकारिता से, अपने आप और अपने सभी वंशजां को

इन गुणों से अलग कर लिया।

इफि.-4:24, उत-3:13, । तिमु-2:13,14, उत-3:6, रोमि - 5:12

प्रश्न 10 : क्या परमेश्वर ऐसी अनाज्ञाकारिता और भटकने को सहन करेगा और इसका दण्ड नहीं देगा ?

उत्तर : कदापि नहीं, वरन् वह हमारे मौलिक पाप और वास्तविक पाप से बहुत दु:खी होता है और उन्हें उचित न्याय से अस्थायी और हमेशा के लिए दण्ड देगा, जैसी कि उसने घोषणा की है। जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता शापित है।

उत-2:17, रोमि-5:12, भज-50:21, नहे-1:2, निर्ग-20:5, 34:7, रोमि-1:18, इफि- 5:6, व्य-27:26, गला- 3:16

प्रश्न 11 : तब क्या परमेश्वर दयालु नहीं है?

उत्तर : परमेश्वर दयालु है, परंतु वह न्यायी भी है, इसलिए उसके न्याय की मांग है कि पाप जो उसकी बड़ी महिमा के विरुद्ध हुआ है, उसका दण्ड भी बड़ा हो जो कि शरीर और आत्मा पर हमेशा का दण्ड है।

निर्ग-34:6,7, 20:6, भज-7:9, निर्ग-20:5, 23:7, 34:7, भज-5:45

दूसरा भाग

छुटकारा

प्रभु का दिन - V

प्रश्न 12 : तब जबकि, परमेश्वर के धर्मी न्याय से हम अस्थायी और अनन्तकाल दण्ड के हकदार है तो क्या ऐसा कोई उपाय नहीं, जिससे हम इस दण्ड से बच सकें और दुबारा उसका पक्ष प्राप्त कर सकें ?

उत्तर : परमेश्वर का न्याय का संतुष्ट होना आवश्यक है, इसलिए हमें उसके न्याय को संतुष्ट करना आवश्यकत है। चाहे अपने आप अथवा किसी अन्य के द्वारा।

उत -2:17, निर्ग-23:7, यहेज-18:4, मत- 5:26, ॥ थिस-1:6, लूका-16:2, रोमि-8:4

प्रश्न 13 : लेकिन क्या हम स्वयं पूर्ण संतुष्टि कर सकते हैं?

उत्तर : कदापि नहीं, वरन हम रोज इसे (न्याय) को बढ़ाते जाते हैं।

अय-9:2, 15:15,16, 4:18,19, भज-130:3, मत्ती-6:12, 18:25, 16:26

प्रश्न 14 : क्या कहीं कोई ऐसा प्राणी है, जो हमारे बदले परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट कर सकता है?

उत्तर : नहीं ! परमेश्वर हमारे बदले किसी अन्य प्राणी को उस पाप के बदले जो हमने किया है, दण्ड नहीं देगा। और न ही मात्र प्राणी, पाप के विरुद्ध परमेश्वर के अनन्त क्रोध के बोझ को सह सकता कि दूसरों को इससे बचा ले।

यहेज-18:4, उत-3:17, नहे-1:6, भज 130-3

प्रश्न 15 : तो हमें किस प्रकार का मध्यस्थ और छुड़ाने वाला चाहिए ?

उत्तर : वह जो सच्चा और धर्मी मनुष्य हो और फिर भी सभी प्राणियों से सामर्थी हो, जो सच्चे परमेश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं है।

I कुरि-15:21, इब्रा-7:26, यशा-7:14, 9:6, यिर्म-23:6, लूका-11:22

प्रभु का दिन - VI

प्रश्न 16 : क्यों आवश्यक है, कि वह सच्चा और धर्मी मनुष्य हो?

उत्तर : क्योंकि परमेश्वर का न्याय चाहता है, कि जिस मनुष्य स्वभाव ने पाप किया है, वही पाप के लिए संतुष्टि दे और क्योंकि जो स्वयं पापी है वह दूसरों के पापों के लिए संतुष्टि नहीं दे सकता।

यहेज-18:4, 20, रोमि-5:18, । कुरि-15:21, इब्रा-2:14-16, 27 भज-49:8

प्रश्न 17 : क्यों आवश्यक है कि वह सच्चे परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई न हो?

उत्तर : इसलिए कि वह उसके ईश्वरीय सामर्थ से, अपने मनुष्य स्वभाव में परमेश्वर के क्रोध का बोझ, बरदाश्त कर सके, और हमारे लिये धार्मिकता और जीवन प्राप्त करे?

यशा-9:6, व्य-4:24, नहे-1:6, भज-130:3, यशा-53:4, 5,11

प्रश्न 18 : लेकिन ऐसा मध्यस्थ कौन है, जो एक साथ सच्चा परमेश्वर और सच्चा धर्मी मनुष्य है?

उत्तर : हमारा प्रभु यीशु मसीह ''जो हमारे लिये परमेश्वर की ओर से ज्ञान , धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरा।''

I यूहन्ना-5:20, रोमि-9:5,8:3, गला-4:4, यशा-'9:6, यिर्म-23:6, मला-3:1, लूका-1:42, 2:6,7, रोमि-1:3, 9:5, फिलि-2:7, इब्रा-2:14, 16,17, 4:15, यशा-53:9,11, यिर्म-23:5, लूका-1:35, यूहन्ना-2:46, इब्रा-4:15,

I पत-1:19, 2:22, 3:18, I तिमु-2:5, मत्ती-1:23, I तिमु 3:16, लूका-2:11, इब्रा-2:9, I कुरि-1:30

प्रश्न 19 : तुम इसे कहाँ से जानते हो?

उत्तर : पवित्र सुसमाचार से, जिसे परमेश्वर ने स्वयं पहली बार एदेन की वाटिका में प्रगट किया था, बाद में पवित्र कुलपतियों और नबीयों द्वारा प्रगट किया गया, और बलिदान और व्यवस्था के संस्कारों में इसकी छवि दिखी और अन्त में उसके इकलौते बेटे में पूरी हुई।

उत-3:15, 22:18, 12:3, 49:10, यशा-53, 42:1-4, 43:25, 49:5, 6, 23, यिर्म-23:5,6, 31:32, 33, 32:39-41, मीका-7:18-20, प्रे.-10:43, इब्रा-10:1,7, कुलि-2:7, यूहन्ना-5:46, रोमि-10:4, गला-4:4, 3:24, कुलि-2:17

प्रभु का दिन - VII

प्रश्न 20 : क्या सभी मनुष्य मसीह द्वारा बचाए गए हैं जैसे सभी आदम में नाश हुए?

उत्तर : नहीं ! परंतु वे जो सच्चे विश्वास से मसीह में जुड़ते और उसके सभी फायदे स्वीकार करते हैं।

मत्ती-7:14, 22:14, 16:6, यूहन्ना-1:12, 3:16, 18,36, यशा-53:11, भज-2:12, रोमि-11:3., 3:22, इब्रा-4:3, 5:9, 10:39, 11:6

प्रश्न 21 : सच्चा विश्वास क्या है ?

उत्तर : सच्चा विश्वास सिर्फ ज्ञान ही नहीं है, जिससे मैं उस सच्चाई को थामे रहूँ जो परमेश्वर ने अपने वचन में प्रगट की है, वरन् एक दृढ़ विश्वास है, जो पवित्र आत्मा सुसमाचार से मेरे हृदय में उत्पन्न करता है, कि सिर्फ दूसरों के लिये ही नहीं वरन् पापों से छुटकारा, हमेशा की धार्मिकता और उद्धार, परमेश्वर द्वारा, सिर्फ अनुग्रह से और मसीह के वजह से मुफ्त में मेरे लिये भी है।

याक-2:19, इब्रा-11:1,7, रोमि-4:18-21, 10:10, इफि-3:12, इब्रा-4:16, याक-1:6, गला-5:22, मत्ती:16:17, II कुरि.-4:13, इफि-2:8, फिलि-1:9, रोमि-1:16, 10:17, I कुरि.-1:21, रोमि-1:17, गला-3:11, इब्रा-10:19, इफि-2:8, रोमि-3:24, 5:19, लूका-1:77, 78

प्रश्न 22 : एक मसीही के लिए तब क्या विश्वास करना आवश्यक है?

उत्तर : वह सब कुछ, जिसका वायदा हमसे सुसमाचार में किया गया है, जो हमारे व्यापक और सन्देह रहित मसीह विश्वास के लेख, हमें संक्षेप में सिखाते हैं। यूहन्ना 20:13, मत्ती-28:19, मर-1:15

प्रश्न 23 : ये लेख क्या हैं?

उत्तर :

1. **मैं विश्वास रखता हूँ सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।**
2. **और उसके इकलौते पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह पर**
3. **कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ से देहधारी होकर कुंआरी मरियम से उत्पन्न हुआ।**
4. **पेन्तुस पिलातुस के राज्य में दु:ख उठाया क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया, गाढ़ा गया, अधोलोक में गया।**
5. **तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा।**
6. **आकाश पर चढ़ गया और सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है।**
7. **जहाँ से वह जवितों और मृतकों का न्याय करने के लिये आएगा।**
8. **मैं विश्वास रखता हूँ पवित्र आत्मा पर,**
9. **मैं विश्वास रखता हूँ विश्वासियों की मण्डली पर, संतों की संगति पर,**
10. **पापों की क्षमा,**
11. **देह के जी उठने,**
12. **और अनन्त जीवन पर,**

प्रभु का दिन - VIII

प्रश्न 24 : ये लेख किस तरह से विभाजित हैं?

उत्तर : ये तीन भागों में विभाजित हैं। **पहला**-परमेश्वर पिता और हमारे सृष्टिकर्ता के लेख हैं, **दूसरा**-परमेश्वर पुत्र और हमारे छुटकारें के, **तीसरा**- परमेश्वर पवित्र आत्मा और हमारे पवित्रीकरण के लेख हैं।

प्रश्न 25 : जबकि सिर्फ एक ही ईश्वरीय अस्तित्व है, तो तुम क्यों पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा, तीन की बातें करते हो?

उत्तर : क्योंकि परमेश्वर ने अपने आपको, अपने वचन में ऐसे ही प्रगट किया है कि ये तीनों अलग-अलग व्यक्ति, एक ही सच्चा और अनन्त परमेश्वर है।

व्य-6:4, इफि-4:6, यशा-44:6, 45:5, I कुरि.-8:4,6 यशा-61:1, लूका-4:18, उत-1:2,3, भज-33:6, यशा-48:16, मत्ती-3:16, 17, 28:19, I यूहन्ना-5:7, यशा-61:1,3, यूहन्ना-14:26, 15:26, II कुरि.-13:14, गला-4:6, इफि-2:18, तीत-3:5,6

प्रभु का दिन - IX

प्रश्न 26 : तुम क्या विश्वास करते हो जब तुम यह कहते हो, ''मैं विश्वास रखता हूँ सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की?''

उत्तर : हम विश्वास करते हैं, कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनन्तकालीन पिता ने, आकाश और पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, की सृष्टि बिना किसी (शून्य) से की। जो मसीह उसके बेटे जो मेरा परमेश्वर और मेरा पिता है, के लिये, अपनी अनन्त युक्ति और देखरेख से सृष्टि को संभालता और शासन करता है, जिसमें मैं विश्वास करता हूँ, कि जो भी मेरी आत्मा और शरीर के लिए आवश्यक है वह मुझे देगा, और मुझमें जो कुछ भी बुरा होने की अनुमति वह देता है, आंसुओं की घाटी में वह उसे मेरी भलाई में परिवर्तित कर देगा, वह ऐसा करने में सक्षम है। क्योंकि वह सर्वसामर्थी परमेश्वर और एक विश्वास योग्य पिता है।

उत-1, 2, निर्ग-20:11, अय-33:4, 38:39, 4:24, 14:15, भज-33:6, यशा-45:7, इब्रा-1:3, भज-104:27-30, 115:3, मत्ती-10:29, इफि-1:11, यूहन्ना-1:12, रोमि-8:15, गला-8:15, गला-4:5-7, इफि-1:5, भज-55:22, मत्ती-6:25, 26, लूका-12:22, रोमि-8:28

प्रभु का दिन - X

प्रश्न 27 : परमेश्वर की देखरेख (ईश्वरीय कृपादृष्टि) से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर : इससे हमारा तात्पर्य है, कि परमेश्वर की सर्वसामर्थी और सर्वव्यापी सामर्थ, जिससे वह आकाश, पृथ्वी और जो कुछ उसमें है, सबको संभालता और शासित करता है, कि पेड़ और घास, वर्षा और सूखा, उपज और उपजाऊ वर्ष, खाना और पीना, अच्छा स्वास्थ्य और बीमारी, अमीरी और गरीबी, सभी कुछ अचानक नहीं होता, वरन् उसके हाथों से होता है।

प्रे-17:25-28, यिर्म-23-23-24, यशा-29:15,16, यहेज-8:12, इब्रा-1:3, यिर्म-5:24, प्रे-14:17, यूहन्ना-9:3, नीति-22:2, मत्ती-10:29, नीति-16:33

प्रश्न 28 : हमें इस बात से क्या फायदा है कि उसने सब कुछ बनाया और अपनी देखरेख में सब चीजों को स्थिर रखता है?

उत्तर : इससे हमें यह फायदा है, कि विपत्ति में हम धैर्य रखें, सफलता में धन्यवाद दें और आने वाले समय में हम हमारे परमेश्वर और पिता में विश्वास रख सकें, कि कोई भी हमें उसके प्रेम से अलग नहीं कर सकता, क्योकि सभी प्राणी उसके हाथ में हैं कि बिना उसकी इच्छा से वे कुछ नहीं कर सकते।

रोमि-5:3, याक-1:3, भज-39:9, अय-1:21, 22,I थिस-5:18, व्य-8:10, भज-55:22, रोमि-5:4, 8:38, 39, अय-1:12, 2:6, नीति-21:1, प्रेरि-17:26

प्रभु का दिन - XI

प्रश्न 29 : परमेश्वर के पुत्र को यीशु जो कि उद्धारकर्ता है क्यों कहा गया है?

उत्तर : क्योंकि वह हमें सभी पापों से छुड़ाता और बचाता है, और इसलिए भी कि उसके अतिरिक्त अन्य किसी में उद्धार नहीं है।

मत्ती-1:21, इब्रा-7:25, प्रे-4:12, यूहन्ना-15,4,5, I तिमु-2:5

प्रश्न 30 : तब, वे जो अपना उद्धार और संतों की देखभाल का कार्य अपने आप करते हैं, उन्हें सिर्फ यीशु पर विश्वास करना चाहिये अथवा अन्य किन्हीं बातों में?

उत्तर : उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, यद्यपि शब्दों में वे उस पर (यीशु) घमण्ड करते हैं। फिर भी कार्यों में एकमात्र उद्धारकर्ता यीशु का इन्कार करते हैं। दो में से एक बात सत्य होनी आवश्यक है, या तो यीशु पूर्ण उद्धारकर्ता नहीं, अन्यथा जो सच्चे विश्वास से इस उद्धारकर्ता को स्वीकार करते हैं उसमें जो कुछ उद्धार के आवश्यक है, पा लेते हैं, मानना आवश्यक है।

I कुरि-1:13, 3, गला-5:4, इब्रा-12:2, यशा-9:6, कुलि-1:19, 20, 2:10, I यूहन्ना-17

प्रभु का दिन - XII

प्रश्न 31 : उसे मसीह जिसका तात्पर्य अभिषिक्त है, क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्योंकि, वह परमेश्वर पिता द्वारा नियुक्त किया गया और पवित्र आत्मा से अभिषेक किया गया है, कि हमारा मुख्य नबी और शिक्षक हो, जिसने परमेश्वर की गुप्त युक्ति और हमारे छुटकारे की इच्छा को, पूर्णता हम पर प्रगट किया है और हमारा महायाजक है, जिसने अपने शरीर के बलिदान से हमें छुड़ा लिया है और निरन्तर हमारे लिए परमेश्वर से विनती करता है और हमारा अनन्त राजा है, जो अपने वचन और आत्मा से हम पर प्रभुता करता है और उस उद्धार में जो उसने हमें दिया हमें संभालता और सुरक्षा प्रदान करता है।

भज-45:7, इब्रा-1:9, यशा-61:1, लूका-4:18, व्य-18:15, प्रे-3:22,

7:37, यशा-55:4, यूहन्ना-1:18, 15:15, भज-110:4, इब्रा-10:12, 14, 9:12, 14, 28, रोमि-8:34, इब्रा-9:24, I यूहन्ना-2:1, रोमि-5:9,10, भज-2:6, जक-9:9, मत्ती-2:15, लूका-1:33, मत्ती-28:18, प्रक-12:10,11

प्रश्न 32 : परंतु तुम्हें मसीही क्यों कहा जाता है?

उत्तर : क्योंकि मैं विश्वास से मसीह का सदस्य हूँ और उसके अभिषेक में शामिल हूँ, कि मैं उसका नाम ले सकूं, अपने आपको धन्यवाद का जीवित बलिदान करके उसे प्रस्तुत करूँ और आजाद और भले विवेक से इस जीवन में पाप और शैतान से युद्ध कर सकूं और यहाँ के बाद उसके साथ हमेशा सभी (लोगों) प्राणियों पर राज्य करूँ।

प्रे-11:26, I कुरि-6:15, I यूह-2:27, प्रे-2:17, मत्ती-10:32, रोमि-10:10, 12:1, I पत-2:5,9, प्रका-1:6, 5:8,9, I पत-2:11, रोमि-6:12,13, गला-5:16, 17, Eph-6:11, I तिमु-1:10, 18, II तिमु-2:12, मत्ती-25:34

प्रभु का दिन - XIII

प्रश्न 33 : उसे परमेश्वर का इकलौता पुत्र क्यों कहा जाता है, जबकि हम भी परमेश्वर की संतान हैं ?

उत्तर : क्योंकि एकमात्र मसीह ही परमेश्वर का अनन्तकालीन, स्वाभाविक पुत्र है, परंतु हम अनुग्रह से मसीह के लिए परमेश्वर की गोद ली हुई संतान है।

यूह-1:14, इब्रा-1:1, 2, यूह-3:16, I यूह-4:9, रोमि-8:16, 32, यूह-1:12, गला-4:6, इफि-1:5,6

प्रश्न 34 : तुम उसे अपना प्रभु क्यों कहते हो?

उत्तर : क्योंकि उसने हमें, हमारी आत्मा और शरीर को हमारे सभी पापों से, सोने और चांदी से नहीं वरन अपने बहुमूल्य रक्त से छुड़ाया है और शैतान की सभी सामर्थ से छुड़ाकर हमें अपना बनाया है।

I पत-1:18, 19, 2:9, I कुरि.-6:20, I तिमु-2:6, यूह-20:28

प्रभु का दिन - XIV

प्रश्न 35 : वह पवित्र आत्मा से देहधारी होकर कुंवारी मरियम से उत्पन्न हुआ इसका क्या तात्पर्य है?

उत्तर : इसका मतलब है, कि जो परमेश्वर का अनन्तकालीन पुत्र है, जो सच्चा और अनन्त परमेश्वर है और निरन्तर रहेगा, उसने मनुष्य का स्वरूप धारण किया,

पवित्र आत्मा के सामर्थ से कुंवारी मरियम से खून और शरीर धारण किया कि वह दाऊद का सच्चा वंशज और पाप को छोड़कर, सभी बातों में अपने भाइयों के समान बने।

I यूह-5:20, यूह-1:1, 17:3, रोमि-1:3, 9:5, गला-4:4, लूका-1:31, 42, 43, मत्ती-1:20, लूका-1:35, रोमि-1:3, भज-132-11, II शम-7:12, लूका-1:32, प्रे-2:30, फिल-2:7, इब्रा-2:14, 17, 4:15

प्रश्न 36 : पवित्र गर्भधारण और मसीह के जन्म लेने तुम्हें क्या फायदा होता है?

उत्तर : हमारा फायदा है कि वह हमारा मध्यस्थ है और उसकी निर्दोषता और सिद्ध पवित्रता में परमेश्वर के सामने हमारे पाप, जिनमें हमारा गर्भधारण और जन्म हुआ ढक जाते हैं।

इब्रा-7:26,27, I पत-1:18,19, 3:18, I कुरि.-1:30, रोमि-8:3,4, यशा-53:11, भज-32:1

प्रभु का दिन - XV

प्रश्न 37 : इसका क्या मतलब है, कि उसने दु:ख उठाया?

उत्तर : इसका मतलब है कि अपने पूरे जीवन काल वह जब पृथ्वी पर रहा, विशेषकर जीवन के अन्तिम समय, उसने शरीर और आत्मा में, पूर्ण मनुष्य जाति के पाप के विरुद्ध, परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर ले लिया, ताकि अपनी यातना के प्रायश्चित, बलिदान से वह हमारी आत्मा और शरीर को अनन्तकाल की यातना से छुड़ाकर, हमारे लिए परमेश्वर का अनुग्रह, धार्मिकता और अनन्त जीवन प्राप्त करे।

यशा-53:4, I पत-2:24, 3:18, I तिमु-2:6, यशा-53:10, इफि-5:2, I कुरि-5:7, I यूह-2:2, रोमि-3:25, इब्रा-9:28, 10:14, गला-3:13, कुलि-1:13, इब्रा-9:12, I पत-1:18,19, रोमि-3:25, II कुरि- 5:21, यहू-3:16, 6:51, इब्रा-9:15, 10:19

प्रश्न 38 : उसने पेन्तुस पिलातुस के राज्य में दु:ख क्यों उठाया?

उत्तर : यद्यपि वह निर्दोष था, फिर भी वह अस्थायी न्यायधीश द्वारा दोषी ठहराया गया, जिससे उसने हमें परमेश्वर के न्याय जिसके हम आधीन थे, से स्वतन्त्र किया।

यूह-18:38, मत्ती-27:24, लूका-23:14, भज-19:4, भज-16:4, यशा-53:4,5, II कुरि-5:21, गला-3:13

प्रश्न 39 : क्या उसका क्रूस पर प्राण देना ज्यादा उचित था, इसकी अपेक्षा कि वह किसी और प्रकार से मृत्यु प्राप्त करता?

उत्तर : हाँ ! हाँ क्योंकि इस मृत्यु से मैं आश्वस्त होता हूँ, कि वह शाप जो मुझ पर था उसने अपने ऊपर ले लिया, क्योंकि क्रूस की मृत्यु परमेश्वर की और शापित थी।

गला-3:13, व्य-21:23

प्रभु का दिन - XVI

प्रश्न 40 : यह क्यों आवश्यक था कि मसीह अपने आपको मृत्यु तक दीन करे ?

उत्तर : क्योंकि परमेश्वर के न्याय और सच्चाई के लिए और हमारे पापों की संतुष्टि के लिए, परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु के अतिरिक्त कोई अन्य उपाय नहीं था।
उत-2:12, रोमि-3:3:4, इब्रा-2:14,15

प्रश्न 41 : उसे दफनाया क्यों गया?

उत्तर : प्रमाणित करने के लिये, कि वह वास्तव में मरा था।
प्रे-13:29, मत्ती-27:59,60, लूका-23:53, यूहन्ना-19:38

प्रश्न 42 : जबकि मसीह हमारे मर गया, हमारा मरना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : हमारी मृत्यु हमारे पाप की संतुष्टि नहीं है, वरन् हम पाप के लिए मरते हैं और अनन्त जीवन में प्रवेश करते हैं।
मर-8:37, भज-49-7, फिलि-1:23, यहू-5:24, रोमि-7:24

प्रश्न 43 : हमें मसीह के क्रूस पर बलिदान और मृत्यु से और क्या फायदे होते हैं?

उत्तर : हमें फायदे होते हैं, कि उसकी सामर्थ से हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूसित, मारा और दफनाया गया, कि शरीर की बुरी लालसाएं हम पर प्रभुता न कर सके, वरन् हम अपने आपको, उसको धन्यवाद का बलिदान करके प्रस्तुत करें।

रोमि-6:6, 12, 12:1

प्रश्न 44 : वह नरक में गया यह बात क्यों लिखी गयी ?

उत्तर : इसलिए कि बड़ी परीक्षाओं के समय, मैं आश्वस्त रहूँ और इस बात में तसल्ली पाऊँ कि मेरा प्रभु यीशु मसीह अपने अवर्णनीय दु:ख, यातना, भय और नरक की यातना जो उसने अपने सभी दु:खों में सहन की, परंतु विशेषकर क्रूस पर सही जिससे उसने मुझे नरक के दु:ख और यातना से छुड़ा लिया है।
भज-18:4,5, 116:3, मत्ती-26:38, 27:46, इब्रा-5:7, यशा-53:5

प्रभु का दिन - XVII

प्रश्न 45 : मसीह के पुनरुत्थान से हमें क्या लाभ होता है?

उत्तर : **पहला**- अपने पुनरुत्थान से उसने मृत्यु पर विजय पाई, कि वह हमें अपनी धार्मिकता में शामिल करे, जो उसने हमारे लिए अपनी मृत्यु से प्राप्त की, **दूसरा**-हम भी उसकी सामर्थ से नये जीवन को पाते हैं (जी उठते हैं) **तीसरा**-मसीह का पुनरुत्थान हमारे पुनरुत्थान की पक्की गारन्टी है।

रोमि-4:25, I पत-1:3, I कुरि-15:16, रोमि-6:4, कुलि-3:1, इफि-2:56, I कुरि-15:20, 21

प्रभु का दिन - XVIII

प्रश्न 46 : वह स्वर्ग पर चढ़ गया इससे तुम क्या समझते हो?

उत्तर : मसीह अपने चेलों के सामने पृथ्वी से आकाश पर चढ़ गया और वह निरंतर वहाँ हमारे लिए है, जब तक कि वह दोबारा जीवितों और मृतकों का न्याय करने नहीं आता।

प्रे-1:9, मर-16:19, लूका-25:51, इब्रा-9:24, 4:15, रोमि-8:34, कुलि-3:4, प्रे-1:11, मत्ती-24:30

प्रश्न 47 : तो क्या मसीह हमारे साथ जगत के अंत तक नहीं है जैसा उसने वादा किया है?

उत्तर : मसीह पूर्ण मनुष्य और पूर्ण परमेश्वर है, अपने मनुष्य स्वभाव में वह अब पृथ्वी पर नहीं है। परंतु अपने ईश्वरीय, गौरव, महिमा, आत्मा में एक पल के लिए भी हमसे अलग नहीं है।
यूह-14:18, मत्ती-28:20

प्रश्न 48 : यदि उसका मनुष्य स्वभाव वहाँ नहीं है, जहाँ उसका ईश्वरीय स्वभाव है, तो क्या मसीह के दो स्वभाव एक दूसरे से अलग नहीं हो गये?

उत्तर : कदापि नहीं ! क्योंकि ईश्वरीय स्वभाव असीमित और हर जगह उपस्थित हैं। इसलिये समझना आवश्यक है, कि यह मनुष्य स्वभाव जो उसने धारण किया से बहुत विशाल है और इसलिए मनुष्य स्वभाव में है और उसमें व्यक्तिगत रीति से संगठित है।
यिर्म-23:24, प्रे-7:49, कुलि-2:9, यहू-3:13, 11:15, मत्ती-28:6

प्रश्न 49 : मसीह स्वर्ग पर चढ़ गया इसका हमारे लिये क्या फायदा है?

उत्तर : **पहला** -कि स्वर्ग में पिता की उपस्थिति में वह हमारा वकील है, **दूसरा**-यह पक्की निश्चयता है कि हमारी देह स्वर्ग में है, वह सिर है और हम जो उसका (हिस्सा) सदस्य हैं, अपने साथ ले जाएगा, **तीसरा**-उसने अपनी आत्मा हमें दी है जो संकल्प है, जिसकी सामर्थ से हम उन वस्तुओं की खोज में रहते हैं, जो स्वर्ग की है जहां मसीह विद्यमान है और परमेश्वर की दाहिनी ओर विराजमान हैं और हम अपना मन पृथ्वी की वस्तुओं पर नहीं लगाते।
I यूह-2:1, रोमि-8:34, यूह-14:2, 17:24, 20:17, इफि-2:6, यूह-14:16, 16:7, प्रे-2:33, II कुरि-1:22, 5:5, यूह-14:2, 17:24, 20:17, इफि-2:6

प्रभु का दिन - XIX

प्रश्न 50 : और वह परमेश्वर के दाहिने बैठा है, इस बात को क्यों लिखा (जोड़ा) गया?

उत्तर : क्योंकि मसीह स्वर्ग पर इसलिये चढ़ गया कि वह वहाँ पर कलीसिया का मुखिया बनकर उपस्थित हो, जिसके द्वारा पिता सभी चीजों पर शासन (प्रभुता) करता है।
इफि-1:20-23, कुलि-1:18, मत्ती-28:18, यूह-5:22

प्रश्न 51 : हमारे मुखिया (प्रमुख) मसीह की इस महिमा में हमारा क्या लाभ है?

उत्तर : **पहला** - कि वह अपनी आत्मा के द्वारा हममें (जो उसके सदस्य हैं) स्वर्गीय उपहार (दान) प्रदान करता है। **दूसरा**-और अपनी सामर्थ से हमें हमारे दुश्मनों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करता है।
प्रे-2:33, इफि-4:8, भज-2:9, 110:1,2, यूह-10:28, इफि-4:8

प्रश्न 52 : ''मसीह जीवित और मृतकों का न्याय करने आयेगा'' इस बात में तुम्हारी क्या तसल्ली है?

उत्तर : इसमे हमारी तसल्ली है, कि अपने सारे दु:खों और यातनाओं में मैं अपनी आंखें उसकी तरफ उठाऊं, जिसने मेरे लिए अपने आपको परमेश्वर के न्याय के लिए बलिदान कर दिया और मुझसे सारे शाप को दूर किया, कि एक न्यायाधीश के रूप में स्वर्ग से आएगा, जो मेरे और अपने दुश्मनों को अनन्त काल के लिए दोषी ठहरायेगा, परंतु मुझे अपने चुने हुओं के साथ अपने लिए स्वर्गीय आनन्द और महिमा में ले जाएगा।
फिलि-3:20, लूका-21:28, रोमि-8:23, तीत-2:13, तीत-2:13, I थिस-4:16, मत्ती-25:41, II थिस 1:16

प्रभु का दिन - XX

प्रश्न 53 : पवित्र आत्मा के विषय में आप क्या विश्वास करते हैं?

उत्तर : **पहला**-कि वह पिता और पुत्र के साथ अनन्तकालीन परमेश्वर है, **दूसरा**-वह मुझे दिया गया है, और उसने मुझे सच्चे विश्वास से मसीह और उसके सभी फायदों में सम्मिलित किया है, कि मुझे तसल्ली दे और मेरे साथ सदा बना रहे।
I यूह-5:7, उत-1:2, यशा-48:16, I कुरि-3:16, 6:19, प्रे-5:3,4, गला-4:6, मत्ती-28:19,20, I कुरि-1:22, इफि-1:13, गला-3:14, I पत-1:2, यूह-15:26, प्रे-9:31, यूहन्ना 14:16, I पत-4:14

प्रभु का दिन - XXI

प्रश्न 54 : विश्वसियों की मण्डली (विश्व व्यापक कलीसिया) के विषय में आप क्या विश्वास करते हैं?

उत्तर : परमेश्वर का बेटा, (यीशु) संसार के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक, सभी मानव जाति में से अपनी आत्मा और वचन के द्वारा सच्चे विश्वास की एकता में, कलीसिया (मण्डली) जो अनन्त जीवन के लिये चुनी गयी है। उसे अपने लिए इकट्ठा, उसकी रक्षा और उसको सुरक्षा प्रदान करता है और यह कि मैं उसका हमेशा एक जीवित सदस्य बना रहूंगा।
इफि-5:26, यूहन्ना-10:11, प्रे-20-28, इफि-4:11-13, उत-26:4, प्रका-5 : 9, भज-71:17,18, यशा-59:21, I कुरि-11:26, मत्ती-16:18, यूहन्ना-10:28-30, यशा-59:21, रोमि-1:16, 10:14-17, प्रे-2:42, इफि-4:3-5, रोमि-8:29, इफि-1:10-13, I यूहन्ना-3:14-19-21, भज-23-6, I कुरि-1:8,9, यूहन्ना-10:28

प्रश्न 55 : संतों की संगति से आप क्या समझते हो?

उत्तर : **पहला** - कि सभी और हर एक विश्वासी जो मसीह के सदस्य हैं, उसमें और उसके सभी खजाने और दान में शामिल है। **दूसरा**-सभी को यह जानना आवश्यक है, कि वे अपने दानों को स्वेच्छा और आनन्द से दूसरों की भलाई और उद्धार के लिए इस्तेमाल करने के लिए बाध्य है।
I यूहन्ना-1:3, रोमि-8:32, I कुरि-12:12, 13, 6:17, 12:21, 13:1,5, फिलि-2:4-8

प्रश्न 56 : पापों की क्षमा के विषय में तुम क्या विश्वास करते हो?

उत्तर : हमारा विश्वास है, कि मसीह की संतुष्टि के लिये परमेश्वर मेरे पापों को याद नहीं रखेगा, न ही मेरे पापी स्वभाव को, जिसके विरुद्ध मैं पूरे जीवनकाल

में संघर्ष करता हूँ, परंतु अनुग्रह में मुझे मसीह की धार्मिकता देता है और मुझ पर दोष न लगाया जाएगा।

I यूहन्ना-2:2, 1:7, II कुरि-5:19, रोमि-7:23-25, यिर्म-31:34, मीका-7:19, भज-103:3,10,12, यूहन्ना-3:18, 5:24

प्रभु का दिन - XXII

प्रश्न 57 : शरीर के पुनरुत्थान में आपकी तसल्ली क्या है?

उत्तर : कि इस जीवन के बाद तत्काल सिर्फ मेरी आत्मा ही, मसीह अपने (मुखिया) सिर के पास न ही जाएगी, वरन मेरा शरीर भी मसीह की सामर्थ से दुबारा मेरी आत्मा से जोड़ा जाएगा और वह मसीह के अद्‌भुद शरीर के समान बनाया जाएगा।

लूका-16:22, 23:43, फिलि-1:21,23, अय-19:25, 26, I यूह-3:2, फिलि-3:21

प्रश्न 58 : अनन्तकाल का जीवन से तुम अपने लिये क्या तसल्ली पाते हो?

उत्तर : इसमें मेरी तसल्ली है कि अभी मैं अपने हृदय में अनन्त आनन्द की शुरुआत अनुभव करता हूँ, इस जीवन के बाद मैं उसे पूर्ण सिद्ध, परम सुख को प्राप्त करूँगा, जिसे कभी आँखों ने नहीं देखा, न ही कानों ने सुना है, न ही वह मनुष्य के हृदय में पहुँचा है और वहाँ हमेशा परमेश्वर की स्तुति होगी।

I कुरि.-5:2,3,6, 2:9

प्रभु का दिन - XXIII

प्रश्न 59 : इस सब में विश्वास करने से तुम्हारा वर्तमान में क्या फायदा है?

उत्तर : कि परमेश्वर के सामने, मैं मसीह में धर्मी और अनन्त जीवन का वारिस हूँ।

हब-2:4, रोमि-1:17, यूहन्ना-3:36

प्रश्न 60 : तुम परमेश्वर के सामने धर्मी कैसे हो?

उत्तर : सिर्फ यीशु मसीह में सच्चे विश्वास से, कि यद्यपि मेरा विवेक मुझ पर दोष लगाता है, कि मैंने परमेश्वर की सभी आज्ञाओं के विरुद्ध पाप किया है और उनमें से एक को भी नहीं माना और अभी भी सभी बुराई के लिए तत्पर रहता हूँ। फिर भी परमेश्वर, बिना मेरे अच्छे कामों और गुणों के, सिर्फ अनुग्रह से मसीह की संतुष्टि, धार्मिकता और पवित्रता को मुझे देता और मुझमें भरता है, जैसे कि मैंने कभी कोई पाप ही नहीं किया और मैंने ही सारी आज्ञाओं को पूरा किया है जिसे मसीह ने मेरे लिये किया, यदि मैं इन फायदों को एक

विश्वास करने वाले हृदय से स्वीकार करता हूँ।

रोमि-3:21-24, 5:1,2, गला-2:16, इफि-2:8,9, फिलि-3:9, रोमि-3:9, 7:23, तीत-3:5, व्य-9:6, रोमि-3:24, इफि-2:8, रोमि-4:4, II कुरि-5:19, I यूहन्ना 2:1,2, II कुरि-5:21, रोमि-3:22, यूहन्ना-3:18

प्रश्न 61 : तुम यह क्यों कहते हो कि तुम सिर्फ विश्वास से धर्मी हो?

उत्तर : इसलिये नहीं कि मैं अपने विश्वास की योग्यता से परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया गया हूँ, वरन मसीह की संतुष्टि, धार्मिकता और पवित्रता ही, परमेश्वर के सामने मेरी धार्मिकता है और मैं इसे पाकर अपना बना सकता हूँ उसके लिये विश्वास के अतिरिक्त कोई अन्य माध्यम नहीं है।

I कुरि-1:30, 2:2, I यूहन्ना-5:10

प्रभु का दिन - XXIV

प्रश्न 62 : क्यों हमारे अच्छे कार्य पूर्ण, अथवा कुछ हद तक परमेश्वर के सामने हमारी धार्मिकता नहीं हो सकते?

उत्तर : क्योंकि धार्मिकता जो परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने स्थिर रह सकती है, वह पूर्ण सिद्ध और ईश्वरीय व्यवस्था के अनुकूल होनी चाहिए, जबकि हमारे इस जीवन के अच्छे कार्य अधूरे और पाप में घृणित हैं।

गला-3:10, व्य-27:26, यशा-64:6

प्रश्न 63 : क्या हमारे अच्छे कार्यों का कोई महत्व नहीं, जबकि परमेश्वर फिर भी उनका प्रतिफल इस जीवन और आने वाले जीवन में देगा।

उत्तर : यह इनाम हमारे कार्यों का फल नहीं वरन अनुग्रह से मिलता है।

लूका-17:10

प्रश्न 64 : तब क्या यह शिक्षा (सिद्धान्त) हमें आलसी और गैर जिम्मेदार नहीं बनाता?

उत्तर : कभी नहीं। यह असम्भव है कि जो सच्चे विश्वास से मसीह से जुड़े हैं, वे धन्यवाद के फलों को न लाए।

मत्ती - 7:18, यूहन्ना-15:5

प्रभु का दिन - XXV

प्रश्न 65 : जबकि हम सिर्फ विश्वास से मसीह और उसके सभी फायदों में शामिल है, यह विश्वास कहाँ से आता है?

उत्तर : पवित्र आत्मा से, जो पवित्र सुसमाचार के प्रचार से हमारे हृदय में इसे उत्पन्न करती है और पवित्र संस्कार के इस्तेमाल से इसकी पुष्टि होती है।

इफि-2:8, 6:23, यूहन्ना-3:5, फिलि-1:29, मत्ती-28:19, I पत-1:22, 23

प्रश्न 66 : संस्कार क्या हैं?

उत्तर : संस्कार पवित्र, सदृश्य, चिन्ह और मोहर जिन्हें परमेश्वर ने नियुक्त किया है, कि इसके इस्तेमाल से वह सुसमाचार के वायदों को हमारे लिए बहुतायत से घोषित और दृढ़ कर सके, कि मसीह के एक बलिदान जो उसने क्रूस पर दिया, वह हमें अनुग्रह देता है कि हम पापों की क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त करें।

उत-17:11, रोमि-4:11, व्य-30-6, लैव-6:25, इब्रा-9:7-9, 24, यहेज-20:12, यशा-6:6,7, 54:9

प्रश्न 67 : तब, क्या वचन और संस्कार दोनों हमारे विश्वास को यीशु मसीह के क्रूस के बलिदान की ओर निर्देशित करते हैं कि वही हमारे उद्धार का आधार है ?

उत्तर : हाँ ! यह सच है। पवित्र आत्मा हमें सुसमाचार में सिखाती और संस्कार से निश्चित करती है, कि हमारे पूर्ण उद्धार का आधार मसीह का एक बलिदान है जो उसने क्रूस पर दिया।

प्रश्न 68 : मसीह ने नये नियम अथवा वाचा में कितने संस्कार नियुक्त किये हैं?

उत्तर : दो-पवित्र बपतिस्मा और पवित्र भोज।

प्रभु का दिन - XXVI

प्रश्न 69 : किस प्रकार से पवित्र बपतिस्मा तुम्हारे लिए चिन्ह और निश्चयता है, कि मसीह के क्रूस पर बलिदान में तुम शामिल हो?

उत्तर : मसीह ने पानी से बाहरी सफाई नियुक्त की है, और इसमें वायदा किया है कि मैं उसके रक्त और आत्मा से, अपनी आत्मा की गन्दगी जो मेरे सभी पाप हैं, से साफ किया जाता हूँ, यह उतना ही निश्चित है, जैसे पानी से शरीर की सारी गन्दगी साफ हो जाती है।

मत-28:19, I पत-3:21, मर-1:4, लूका-3:3, मर-16:16, प्रे-2:38, यूह-1:33, मत-3:11, रोमि-6:3,4

प्रश्न 70 : मसीह के खून और आत्मा से साफ होने का क्या मतलब है?

उत्तर : इसका मतलब है कि परमेश्वर ने अनुग्रह से, मसीह के खून के लिये जो उसने अपने बलिदान में क्रूस पर बहाया, हमारे पापों को क्षमा किया है और यह भी कि पवित्र आत्मा द्वारा नये होकर और पवित्र होकर मसीह के सदस्य बन जाए, कि हम अधिक से अधिक पाप के लिए मरें और पवित्र और

निर्दोष जीवन जी सकें।

इब्रा-12:24, I पत -1:2, प्रका-1:5, 7:14, जक-13:1, यहेज-36:25, यूह-1:33, 3:5, I कुरि-6:11, 12:13, रोमि-6:4, कुलि-2:12

प्रश्न 71 : मसीह ने हमें इसका आश्वासन कहाँ दिया है, कि हम उसके रक्त और आत्मा से धोये गये, उसी निश्चयता के साथ जैसे हम बपतिस्में में पानी से धोये गये?

उत्तर : बपतिस्में की नियुक्ति में जिसे ऐसे पढ़ा जाता है, ''इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।'' मत्ती-28:19, ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा परंतु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।'' मरकुस 16:16, यह वायदा दोहराया गया है जहाँ पवित्र शास्त्र कहता है बपतिस्मा नये जन्म और पापों से धुलने का बपतिस्मा है। तीतुस-3:5, प्रे.-22:16, तीत-3:5, प्रे-22:16

प्रभु का दिन - XXVII

प्रश्न 72 : तब क्या पानी से बाहरी धुलाई अपने आप में पापों का धुल जाना है?

उत्तर : नहीं ! सिर्फ यीशु मसीह का रक्त और पवित्र आत्मा ही, हमें, हमारे सभी पापों को धो डालते हैं।

मत-3:11, I पत-3:21, इफि-5:26, I यूह-1:7, I कुरि-6:11

प्रश्न 73 : तब क्यों पवित्र आत्मा, बपतिस्मों को नये जन्म के लिए धुल जाना और पापों से धुल जाना कहती है ?

उत्तर : परमेश्वर बिना किसी बड़े उद्देश्य के लिए नहीं बोलता-वह हमें कतई यह नहीं सिखाना चाहता, कि जैसे शरीर की गन्दगी पानी से धुल जाती है, वैसे ही मसीह के रक्त और आत्मा से हमारे पाप दूर हो जाते हैं, परंतु वह सिखाता और हमें आश्वस्त करता है कि इस ईश्वरीय वाचा और चिन्ह से हम अपने पापों से आत्मिक रीति से साफ हो गये हैं। वैसे ही जैसे पानी से बाहरी सफाई हुई है।

प्रका-1:4?5, 7:14, I कुरि-6:11

प्रश्न 74 : क्या शिशुओं को भी बपतिस्मा देना चाहिए?

उत्तर : हाँ ! क्योंकि वे और समझदार व्यक्ति दोनों ही वाचा और कलीसिया में शामिल किये गये हैं, और पापों से छुटकारा और पवित्र आत्मा जो विश्वास

का कर्ता है, दोनों को मसीह के रक्त द्वारा, जैसे बड़ों से वैसे ही शिशुओं से वायदा किया गया है, इसलिए उन्हें बपतिस्मे द्वारा वाचा के चिन्ह से मसीही कलीसियाओं में शामिल किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें अविश्वासियों के बच्चों से अलग पहचान मिल सके, जैसा कि पुराने नियम में खतने के द्वारा होता था, जिसके बदले नये नियम में बपतिस्मा नियुक्त किया गया है।

उत-17:7, मत-19:14, लूका-1:15, भज-20:10, यशा-44:1-3, प्रे-2:39, प्रे-10:47, उत-17:14, कुलु-2:11-13

प्रभु का दिन - XXVIII

प्रश्न 75 : प्रभु भोज में तुम्हारे लिये यह कैसे प्रकट और प्रमाणित होता है, कि मसीह के क्रूस पर बलिदान और उसके सभी फायदों में तुम सम्मिलित हो?

उत्तर : मसीह ने मुझे और सभी विश्वासियों को आज्ञा दी है, कि उसकी याद में हम उस टूटी रोटी में से खायें और उस कप से पिये, जिसमें उसने हमसे यह वायदा किया है- **पहला**-कि उसका शरीर मेरे लिए क्रूस पर चढ़ा और तोड़ा गया और उसका खून मेरे लिये बहाया गया, वैसे ही जैसे मैं देखता हूँ, कि प्रभु भोज की रोटी मेरे लिये तोड़ी जाती है और प्याला मुझे दिया जाता है। **दूसरा**-कि वह अपने क्रूस पर चढ़ाये गये शरीर और बहाये गये लहू से मेरी आत्मा को अनन्त जीवन के लिए पोषित करता है, उसी दृढ़ता के साथ जैसे मैं सेवक के हाथ से प्रभु की रोटी और प्याला लेकर मुंह से स्वाद लेता हूँ, जो यकीनन मसीह के शरीर और रक्त का चिन्ह है।

प्रश्न 76 : मसीह का क्रूस पर चढ़ाया गया शरीर खाना और बहाया रक्त पीना क्या है?

उत्तर : यह सिर्फ इतना ही नहीं है, कि हृदय से, विश्वास से उसके सारे दु:खों और मृत्यु को अपनाकर हम पापों की क्षमा और अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, परंतु यह भी कि पवित्र आत्मा, जो हममें और मसीह में वास करता है, से हम बहुतायत से उसके पवित्र शरीर में संगठित होते हैं, ताकि यद्यपि मसीह स्वर्ग में और हम पृथ्वी पर हैं, तो भी हम उसके मांस का मांस और हड्डियों की हड्डी हैं और एक आत्मा से जीवन जीते और शासित होते हैं। जैसे एक ही शरीर और आत्मा के सदस्य हैं।

यूह-6:35,40,47, 48, 50, 51, 53, 54, 56, कुलु-3:1, प्रे-3:1, I कुरि-11:26, इफि-5:24, 30, 3:16, I कुरि-6:15 I यूह 3:24, 4:13, यूह-6:57, 15:1-6, इफि-4:15-16

प्रश्न 77 : मसीह ने कहाँ यह वायदा किया है, कि जैसे वे उस तोड़ी हुई रोटी से खाते और उस प्याले से पीते हैं तो वह निश्चय ही विश्वासियों को अपने शरीर और लहू से तृप्त और पोषित करेंगे?

उत्तर : जब उसने प्रभु भोज नियुक्त किया तो यह वायदा किया जिसे हम पढ़ते हैं, ''प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली और उसने धन्यवाद देकर रोटी तोड़ी और कहा यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी प्रकार भोजन के पश्चात् उसने यह कहते हुए कटोरा भी लिया, यह मेरे लहू में नई वाचा का कटोरा है जब-जब तुम इसमें से पियो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब जब तुम इस रोटी को खाते और इस कटोरे में से पीते हो तो जब तक प्रभु न आये उसकी मृत्यु का प्रचार करते हो'' एवं पौलुस इस वायदे को दोहराते हुए कहते हैं- ''धन्यवाद का वह कटोरा जिसके लिये हम धन्यवाद देते क्या मसीह के लहू में सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या वह मसीह की देह में सहभागिता नहीं? जबकि रोटी एक ही, तो हम जो बहुत है, एक देह है, क्योंकि हम सब एक रोटी में सहभागी होते हैं।''

I कुरि-10:16, 17, 11:23-26, मत-26:26-28, मर-14:22:24 लूका-22:19, 20

प्रभु का दिन - XXIX

प्रश्न 78 : तब क्या रोटी और दाखरस वास्तव में मसीह का शरीर और लहू बन जाते हैं?

उत्तर : नहीं! परंतु जैसे बपतिस्मे में पानी, मसीह के खून में परिवर्तित नहीं होता न ही स्वत: इससे पाप धुलते हैं। वरन् यह मात्र ईश्वरीय प्रतीक और पुष्टिकरण होता है। उसी प्रकार रोटी प्रभु भोज में, मसीह की सच्ची देह नहीं बन जाती यद्यपि संस्कार के स्वभाव और गुणों में, इसे यीशु मसीह की देह कहा जाता है। मत-26:29, इफि-5:26, तीत-3:5, I कुरि-10:16, 11:26, इफि-5:26, तीत-3:5, उत-17:10,11, निर्ग-12:11,13, 13:9, I मत-3:21, I कुरि-10:3,4

प्रश्न 79 : तब क्यों मसीह रोटी को अपना शरीर और प्याले को अपना लहू अथवा उसके लहू में नई वाचा कहते हैं और पौलुस इसे मसीह के शरीर और लहू में सहभागिता क्यों कहते हैं?

उत्तर : मसीह बिना उद्देश्य के कुछ नहीं कहते-वह इससे हमें सिर्फ यही नहीं

सिखाते, कि जैसे रोटी और दाखरस अस्थायी जीवन को बनाये रखते है, वैसे ही उसकी क्रूसित देह और बहा हुआ लहू अनन्त जीवन के लिए हमारी आत्मा (प्राण) का सच्चा भोजन और पानी है, वरन् इससे ज्यादा वे बताते हैं कि इन सदृश्य चिन्ह और प्रतीज्ञा से हमें आश्वस्त करते हैं, कि हम पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा उसके सच्चे शरीर और लहू में उतने सच्चे सहभागी हैं जैसे हम चिन्हों को उसकी याद में अपने शरीर के मुँह द्वारा लेते हैं। और उसके सारे दु:ख और आज्ञाकारिता निश्चयता से हमारी है-जैसे कि हमने अपने व्यक्तित्व में दु:ख उठाया और हमारे पापों के लिए परमेश्वर को संतुष्ट किया है।

I यूह-6:55, I कुरि-10:16

प्रभु का दिन - XXX

प्रश्न 80 : प्रभु भोज और पोपिश माश (Popish Mass) के बीच में क्या अन्तर है?

उत्तर : प्रभु भोज हमें इस बात की साक्षी देता है, कि यीशु मसीह के एक बलिदान, जिसे उसने स्वयं क्रूस पर दिया, से हमें हमारे पापों से पूर्ण क्षमा प्राप्त है और पवित्र आत्मा से हम मसीह में जोड़े गये हैं, जो हमारे मनुष्य स्वभाव के अनुसार अब पृथ्वी पर नहीं वरन् स्वर्ग में उसके पिता परमेश्वर के दाहिने बैठा है और चाहता है, कि हम उसकी आराधना करें, परंतु Popish Mass सिखाता है, कि यीशु मसीह के दु:खों से जीवित और मृतकों के पाप क्षमा नहीं हुए हैं। जब तक कि मसीह रोजाना, याजक के द्वारा उनके लिए बलि नहीं किया जाता और मसीह शारीरिक रीति से रोटी और दाखरस में उपस्थित होता है, इसलिये उनकी आराधना होनी चाहिए। इस प्रकार Mass मसीह के एक बलिदान और यातना को झूठलाने के अतिरिक्त कुछ नहीं है, और श्रापित मूर्ति पूजा है।

इब्रा-10:10,12, 7:26,27, 9:12,25, यूह-19:30, I कुरि-10:16, 17, 6:17, प्रे-7:56, फिलि-3:20, इब्रा-9:26, 10:12, 14

प्रश्न 81 : प्रभु भोज किनके लिए नियुक्त किया गया?

उत्तर : उनके लिए, जो अपने पापों के लिए दु:खी होते हैं और फिर भी यह विश्वास करते हैं, कि मसीह के कारण उनके पाप क्षमा हुए और उनकी बची हुई कमजोरियां मसीह के यातना और मृत्यु से ढांकी गयी है और जो बहुतायत से अपने विश्वास को मजबूती और जीवन को सुधारना चाहते हैं। परंतु जो दिखावे के लिये परंतु सच्चे हृदय से परमेश्वर के पास नहीं आये हैं, यदि इसमें खाते और पीते हैं तो वे अपने ऊपर परमेश्वर का न्याय लाते हैं।

I कुरि-11:28, 29, 10:19-22

प्रश्न 82 : क्या उन्हें प्रभु भोज देना चाहिए जो अपने अंगीकार और जीवन से यह प्रगट करते हैं कि वे अविश्वासी और अधर्मी हैं?

उत्तर : कदापि नहीं! ऐसा करने से परेश्वर की वाचा घृणित ठहरेगी और उसका क्रोध पूरी कलीसिया के विरुद्ध भड़क उठेगा, इसलिये मसीह कलीसिया का, मसीह और प्रेरितों के अधिनियम के अनुसार, यह कर्तव्य है कि ऐसे लोगों को स्वर्ग राज्य की चाबी से, जब तक वे जीवन में बदलाव नहीं लाते, तब तक प्रभु भोज से अलग रखना चाहिए।

I कुरि-11:20, 34, यशा-1:11, 66:3, यिर्म-7:21, भज-50:16

प्रश्न 83 : स्वर्ग के राज्य की चाबियां क्या है?

उत्तर : सुसमाचार का प्रचार और कलीसिया का अनुशासन अथवा मसीही कलीसिया से बहिष्कृत कर देना है, इन दोनों बातों से स्वर्ग का राज्य विश्वासियों के लिए खुलता और अविश्वासियों के विरुद्ध बन्द किया जाता है।

प्रश्न 84 : किस प्रकार पवित्र सुसमाचार के प्रचार से स्वर्ग का राज्य खोला और बन्द किया जाता है?

उत्तर : सभी विश्वासियों को मसीह की आज्ञा के अनुसार प्रचार और सरे आम साक्षी देने से, कि जब वे सच्चे विश्वास से सुसमाचार की प्रतीज्ञा को स्वीकारते हैं, तो उनके सभी पाप परमेश्वर, मसीह के गुणों के कारण माफ कर देता है। मगर दूसरी तरफ सभी अविश्वासी और वे जो सच्चा पश्चाताप नहीं करते प्रचार और गवाही से उन पर परमेश्वर का क्रोध और अनन्त दोष बना रहता है, जब तक वे परिवर्तित नहीं होते, सुसमाचार के इस गवाही के अनुसार परमेश्वर इस जीवन और आने वाले जीवन में न्याय करेगा।

यूह-20:21-23, मत-16:19

प्रश्न 85 : किस प्रकार कलीसिया के अनुशासन से स्वर्ग का राज्य खुलता और बन्द होता है?

उत्तर : मसीह की आज्ञा अनुसार उन्हें संस्कारों में शामिल नहीं करते, जो मसीह होने का दावा करते हुए, गैर मसीह शिक्षाओं और कार्यों के अनुरूप चलते हैं, जो भाईचारे की ताड़ना और समझाने से अपनी गलती और भ्रष्ट जीवन को नहीं छोड़ते, और जिनकी कलीसिया में शिकायत होने के बाद नियुक्त अगुओ की ताड़ना को अनदेखा करते हैं। इस दोष के कारण उन्हें कलीसिया से बहिष्कृत किया जाता है और परमेश्वर उन्हें मसीह के राज्य से बहिष्कृत करता है और जब वे सच्चा सुधार, बदलाव और प्रतिज्ञा प्रगट करते हैं, उन्हें मसीह और उसकी कलीसिया के सदस्य स्वीकार किया जाता है।

मत-16:15-17, I कुरि- 5:4,5,11, II कुरि-2:6-8

तीसरा भाग

धन्यवादिता (कृतज्ञता)

प्रभु का दिन - XXXII

प्रश्न 86 : जबकि हम अपने दुखों से मसीह द्वारा सिर्फ अनुग्रह से छुड़ाए गए हैं। बिना अपने किसी गुणों और कार्यों के, तो क्यों फिर भी हमें अच्छे कार्य करने चाहिए?

उत्तर : इसलिए कि मसीह ने हमें अपने लहू से छुड़ाया है, वह हमें अपनी पवित्र आत्मा द्वारा अपनी समानता में भी नया बनाता है, कि हम अपने पूर्ण जीवन में परमेश्वर को उसकी आशीषों के लिए धन्यवाद दें और वह हमारे से स्तुति पाए और यह, कि हम सभी उसके विश्वास के फलों से उसमें निश्चित हो जाएं और हमारे अच्छे चाल चलन से हमारे पड़ोसी भी मसीह के लिए जीते जा सकें।
रोमि-6:13, 12:1,2, I पत-2:5,9, I कुरि-6:20, मत-5:16, II पत-1:10, मत-7:17, गला-5:6,22, I पत-3:1,2, रोमि-14:19

प्रश्न 87 : वे जो निरन्तर पाप और घमण्ड में अपने जीवन को जीते और परमेश्वर की तरफ नहीं मुड़ते, तो क्या वे बचाए नहीं जाएंगे?

उत्तर : कदापि नहीं ! पवित्र शास्त्र सिखाता है, कि कोई भी, मूर्ति पूजक, व्यभिचारी, चोर लालची, पियक्कड़, गाली देने वाला, डाकू अथवा अन्य इनके समान परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।
I कुरि-6:9,10, इफि-5:5,6, I यूह-3:14

प्रभु का दिन - XXXIII

प्रश्न 88 : सच्चा परिवर्तन अथवा मनुष्य का परमेश्वर में आना के कितने भाग हैं?

उत्तर : दो-पुराने मनुष्यत्व का विनाश और नये का जी उठना।
रोमि-6:1,4-6, इफि-4:22-24, कुलु-3:5, 6,8-10, I कुरि-5:7, I कुरि-7:10

प्रश्न 89 : पुराने मनुष्यत्व का विनाश (मरना) क्याा है?

उत्तर : यह, हृदय में गहरा दु:ख अनुभव करना है, कि हमने अपने पापों से परमेश्वर को क्रोध दिलाया और अधिक से अधिक उन पापों से घृणा और उनसे दूर भागना है।
रोमि-8:13, योए-2:13, होशे-6:1

प्रश्न 90 : नये मनुष्यत्व का जी उठना क्या है?

उत्तर : यह, हृदय में मसीह द्वारा परमेश्वर में आनन्द है और प्रेम और प्रसन्नता से सभी अच्छे कार्यों में परमेश्वर की इच्छा अनुसार जीवन जीना है।
रोमि-5:1, 14:17, यशा-57:15, रोमि-6:10,11, गला-2:20

प्रश्न 91 : लेकिन अच्छे कार्य क्या है?

उत्तर : सिर्फ वे कार्य, जो परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार और उसकी महिमा के लिये सच्चे विश्वास से किये जाते हैं और वे कार्य नहीं जो हमारे अपने विचार अथवा मनुष्य की समझ से किये जाते हैं।
रोमि-14:23, लैव-18:4, I शम-15:22, इफि-2:10, I कुरि-10:31, यहेज-20:18,19, यशा-29:13, मत-15:7-9

प्रभु का दिन - XXXIV

प्रश्न 92 : परमेश्वर की व्यवस्था क्या है?

उत्तर : परमेश्वर ने ये सब वचन कहे - मैं तेरा यहोवा परमेश्वर हूँ जो मुझे दासत्व के घर अर्थात मिश्र देश से निकाल लाया हूँ।

I. तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।

II. तू अपने लिये कोई मूर्ति खोद कर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में या पृथ्वी पर या पृथ्वी के जल में है, न तो तू उनको दण्डवत करना और न ही उनकी उपासना करना, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहावा जलन रखने वाला परमेश्वर हूँ, जो मुझसे बैर करते हैं उनकी संतान को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक बापदादों की दुष्टता का दण्ड देता हूँ। जो मुझसे प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं का पालन करते हैं उन हजारों हजार पर करुणा करता हूँ।

III. तू अपने परेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना, क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ लेता है उसको यहोवा दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ेगा।

IV. विश्राम दिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छ: दिन तक तू परिश्रम करके अपना सब काम कर लेना, परंतु सातवा दिन तेरे परमेश्वर यहोवा का विश्राम दिन है। उसमें तू कुछ भी काम न करना न तो तू ने, तेरा पुत्र न तेरी पुत्री, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु न तेरे साथ ठहरा हुआ कोई परदेशी। क्योंकि यहोवा ने छ: दिन में

आकाश और पृथ्वी, समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब को बनाया और सातवे दिन विश्राम किया, इसलिये यहोवा ने विश्राम दिन को आशीष दी और उसे पवित्र ठहराया।

V. तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, जिससे जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उसमें तू बहुत दिन तक रहने पाये।

VI. तू हत्या न करना।

VII. तू व्यभिचार न करना।

VIII. तू चोरी न करना।

IX. तू अपने पड़ोसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।

X. तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। तू न अपने पड़ोसी की पत्नी, न उसके दास, न उसकी दासी, न उसके बैल, न उसके गधे न अपने पड़ोसी की किसी भी वस्तु का लालच करना।
निर्ग-20:1-17, व्य-5:6-21

प्रश्न 93 : कैसे इन आज्ञाओं को विभाजित किया गया है?

उत्तर : दो भागों में - **पहली**-कि हमारा व्यवहार परमेश्वर के साथ कैसा होना चाहिए। **दूसरी**-हमारे पड़ोसी के पति क्या कर्तव्य हैं?
व्य-4:13, निर्ग-34:28, व्य-10:3,4, मत्ती-22:37-40

प्रश्न 94 : पहली आज्ञा में परमेश्वर क्या चाहता है?

उत्तर : वह चाहता है, कि जितना मैं अपनी आत्मा के उद्धार से लगाव रखता हूँ, वैसे ही मैं सभी मूर्ति पूजा, तंत्र विद्या, भविष्य कहने वालों, अन्धविश्वास, संतों अथवा अन्यों की बिचवइए की प्रार्थना को अनदेखा और इनसे दूर भागाता हूँ। और मैं एक सच्चे परमेश्वर को सत्यता से मान्यता देता हूँ, सिर्फ उस पर भरोसा, उसको सारी नम्रता और धैर्य के साथ समर्पण, और अपने सम्पूर्ण मन से उसे प्रेम, उसका भय और उसका आदर करता हूँ, मैं सभी प्राणी को छोड़ता इसकी अपेक्षा कि उसके विरुद्ध छोटी बात करूँ।

I यूह-5:21, I कुरि-6:10, 10:7,14, लैव-19:31, व्य-18:9,10, मत-4:10, प्रका-19:10, 22:8,9, यूह-17:3, यिर्म-17:5,7, इब्रा-10:36, कुलु-1:11, रामि-5:3,4, I पत-5:5, भज-104:27, याक-1:17, व्य-6:5, भज-111:10, नीति-1:7, 9:10,

प्रश्न 95 : मूर्ति पूजा क्या है?

उत्तर : एक सच्चे परमेश्वर जिसने वचन में अपने आप को प्रगट किया है, के अलावा अन्य को परमेश्वर मानूं अथवा उसके स्थान पर किसी अन्य पर भरोसा या विश्वास करूं।
इफि-5:5, I इति-16:26, फिलि-3:19, गला-4:8, इफि-2:12, I यूह-2:23, II यूह-9 यूह-5:23

प्रश्न 96 : दूसरी आज्ञा में परमेश्वर क्या चाहता है?

उत्तर : परमेश्वर चाहता है, कि हम किसी भी प्रकार से परमेश्वर की प्रतिमा न बनायें, न ही उसकी आज्ञा जो उसने अपने वचन में दी है, के अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार से उसकी आराधना करें।
यशा-40:18, 19, 25, व्य-4:15:16, रोमि-1:23, प्रे-17:29, I शम-15:23, व्य-12:30, मत-15:9

प्रश्न 97 : तब क्या हम कोई मूर्ति कदापि नहीं बना सके ?

उत्तर : परमेश्वर का किसी भी प्रकार से किसी भी सदृश्य चीज से प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता। यद्यपि प्राणी सृदश्य रूप से प्रतिनिधि हो सकते हैं, फिर भी परमेश्वर हमें उनकी प्रतिमा, समानता में उसकी आराधना और सेवा उनके माध्यम से करना मना करता है।
यशा-40:25, निर्ग-34:17, 23:24,34:13, गिन-33:52

प्रश्न 98 : परंतु क्या कलीसिया में लोगों के लिए पुस्तकों को, प्रतिमा (मूर्ति) के समान सहन नहीं करना चाहिए?

उत्तर : नहीं। हमें परमेश्वर से ज्यादा बुद्धिमान होने की आवश्यकता नहीं है। वह अपने लोगों को बेजान प्रतिमाओं से नहीं सिखाता वरन् अपने वचन के जीवित प्रचार से सिखाता है।
यिर्म-10:8, हब-2:18-19, रोमि-10:14,15, 17, II पत-1:19, II तिमु- 3:16, 17

प्रभु का दिन - XXXVI

प्रश्न 99 : तीसरी आज्ञा में क्या आवश्यक है?

उत्तर : तीसरी आज्ञा में आवश्यक है, कि हम न श्राप, अथवा झूठी गवाही, न ही अनावश्यक कसम खाने से परमेश्वर के नाम की निन्दा अथवा उसे घृणित

ठहरायें, न ही चुप रहकर अथवा अनदेखा करके दूसरों के इस भयंकर पाप में शामिल हों। संक्षेप में हम उसके नाम को भय और आदर के साथ लें, कि वह हमारे द्वारा सच्चा अंगीकार और आराधना पाकर हमारे सभी बातों और कार्यों से महिमा प्राप्त करे।

लैव-24:15, 16, लैव-19:12, मत-5:37, याक-5:12, लैव-5:1, नीति-29:24, यिर्म-4:1, यशा-45:23, मत-10:32, रोमि-10:9, 10, भज-5:1, भज-50:14,15, I तिमु-2:8, कुलु-3:17, रोमि-2:24, I तिमु-6:1

प्रश्न 100 : तो क्या परमेश्वर के नाम को, कसम खाकर और निन्दा करके अपवित्र करना, इतना घृणित (गम्भीर) पाप है, कि उसका क्रोध उनके विरुद्ध भी भड़क जाता है, जो इसे नहीं करते परंतु इसे दूसरों के करने से रोकते भी नहीं।

उत्तर : जी हाँ। परमेश्वर के नाम को अपवित्र करने से बड़ा पाप कोई नहीं, जो उसे और अधिक भड़का सके, इसलिए उसने आज्ञा दी है कि इस पाप का दण्ड मृत्यु है।

नीति-29:24, लैव-5:1

प्रभु का दिन - XXXVII

प्रश्न 101 : क्या हम उचित रीति से परमेश्वर के नाम की शपथ नहीं ले सकते?

उत्तर : हाँ। जब न्यायालय में यह नागरिकों से कहा जाता है, अथवा सच्चाई और सत्य की पुष्टि करने के लिये आवश्यक हो जाता है और परमेश्वर की महिमा और अपने पड़ोसी की भलाई के लिए, इस प्रकार की शपथ खाना (लेना) परमेश्वर के वचन के अनुकूल है और इसलिए पुराने और नये नियम में संतों द्वारा सही प्रकार से शपथ ली गयी।

व्य-6:13, 10:20, यशा-48:1, इब्रा-6:16, उत-21:24, 31:53, यहो-9:15, I शम-24:23, II शम-3:35, I रा-1:29, रोम-1:9, 9:1, II कुरि-1:23

प्रश्न 102 : क्या हम संतों अथवा अन्य प्राणियों की भी शपथ ले सकते हैं?

उत्तर : नहीं! परमेश्वर का नाम लेना ही उचित शपथ है, क्योंकि सिर्फ वह ही हृदय का खोजी है, कि सच्चाई की साक्षी दे और मुझे दण्डित करे यदि मैं झूठी शपथ लेता हूँ। यह सम्मान किसी अन्य प्राणी को नहीं दिया गया है।

II कुरि-1:23, 9:1, मत-5:34-36, याक-5:12

प्रभु का दिन - XXXVIII

प्रश्न 103 : परमेश्वर चौथी आज्ञा में क्या चाहता है?

उत्तर : **पहला** - कि सुसमाचार और विद्यालय की सेवा की देखभाल हो, और यह कि मैं विशेषकर, विश्राम दिन में कलीसिया में उपस्थित होकर परमेश्वर का वचन सीखूंगा, संस्कार में शामिल होऊँगा, प्रभु का नाम सबके सामने लूँगा और मसीही दान दूंगा, **दूसरा**-कि अपने पूर्ण जीवनकाल में, मैं अपने बुरे कार्यों से विश्राम पाऊँगा, पवित्र आत्मा से प्रभु को मुझमें कार्य करने दूंगा। इस प्रकार इस जीवन में अनन्त विश्राम की शुरूआत करूँगा।

इफि-6:1, 2,5, कुलु-3:18, 20, 22, इफि-5:22, नीति-1:8, 4:1, 15:20, निर्ग-21:17, नीति-23:22, उत-9:24, I मत-2:18, इफि-6:4,9, कुलु-3:20, रोमि-13:2, मत-22:21

प्रभु का दिन - XXXIX

प्रश्न 104 : पाँचवीं आज्ञा में परमेश्वर क्या चाहता है?

उत्तर : परमेश्वर चाहता है, कि मैं अपने माता, पिता और जो मेरे ऊपर अधिकार रखते हैं, सबको पूर्ण सम्मान, प्रेम और विश्वास योग्यता प्रदान करूँ और उनकी सही शिक्षा और सुधार को अपनी आज्ञाकारिता से उन्हें समर्पित करूँ और धैर्य से उनकी कमजोरी और दुर्बलता को समझूँ, क्योंकि परमेश्वर उनके द्वारा हम पर प्रभुता करने में आनन्दित होता है।

तीत-1:5, II तिमु-3:14, I कुरि-9:13, 14, भज-40:9,10, 68:26, प्रे-2:42, I तिमु-4:13, I कुरि-14:29, 11:33, I तिमु-2:1, I कुरि-14:16, 16:2, यशा-66:23

प्रभु का दिन - XL

प्रश्न 105 : परमेश्वर छठी आज्ञा में क्या चाहता है?

उत्तर : परमेश्वर चाहता है, कि मैं न विचारों में, न शब्दों अथवा भावनाओं, न कार्यों से, अपने पड़ोसी से नफरत नहीं करूँगा, न नुकसान न हत्या करूँगा, न स्वयं अथवा अन्य किसी के द्वारा; वरन बदले की हर भावना को अपने से अलग करूँगा और मैं अपने आपको हानि नहीं पहुँचाऊंगा, न ही जानबूझकर किसी खतरे में डालूँगा। इसलिए न्यायाधीश के हाथों में तलवार दी गयी है कि वह हत्या होने को रोके।

मत-5:21, 22, 26:52, उत-9:6, इफि-4:26, रोमि-12:19, मत-5:25, 18:35, रोमि-13:14, कुलु-2:23, मत-4:7, उत-9:6, निर्ग-21:14, मत-26:52, रोमि -13:4

प्रश्न 106 : परंतु इस आज्ञा में आभास होता है, कि यह सिर्फ हत्या की बात करती है?

उत्तर : हत्या करना मना है में परमेश्वर सिखाता है, कि वह खून के कारणों जैसे-ईर्ष्या, नफरत, क्रोध और बदले की इच्छा से भी घृणा करता है और वह इन सबको हत्या के समान मानता है।

नीति-14:30, रोमि-1:29, I यूह-2:11, याक-1:20, गला-5:19-21, I यूह-3:15

प्रश्न 107 : क्या यह पर्याप्त नहीं है कि हम किसी प्रकार से अपने पड़ोसी की हत्या नहीं करते?

उत्तर : नहीं। जब परमेश्वर ईर्ष्या, नफरत और क्रोध करना मना करता है तो वह आज्ञा देता है, कि हम अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करें, कि उनके प्रति धैर्य, शांति, दीनता, करुणा और दयालुता प्रगट करे और उसे नुकसान से बचाए, जैसे अपने आपको, और यहाँ तक कि अपने दुश्मनों के साथ भलाई करे।

मत-22:39, 7:12, रोमि-12:10, इफि-4:2, गला-6:1,2, मत-5:5, रोमि-12:18, लूका-6:36, मत-5:7, I पत-3:8, कुलु-3:12, निर्ग-23:5, मत-5:44, रोमि-12:20

प्रभु का दिन - XLI

प्रश्न 108 : सातवीं आज्ञा हमें क्या सिखाती है?

उत्तर : सातवीं आज्ञा सिखाती है कि सारी अशुद्धता (व्यभिचार, कामुकता) परमेश्वर की ओर से शापित है और इसलिए हम हृदय से इससे घृणा करे और दूर रहें, और विवाह में और बाहर दोनों जगह एक पवित्र और संतुष्टि का जीवन जिएं।

लैव-18:28, I थिस-4:3-5, इब्रा-13:4, I कुरि-7:7

प्रश्न 109 : क्या परमेश्वर इस आज्ञा में व्यभिचार और इससे घोर पापों के अतिरिक्त कुछ मना नहीं करते?

उत्तर : जबकि, हमारा शरीर और आत्मा दोनों पवित्र आत्मा के मन्दिर है, उसकी इच्छा है कि हम दोनों को शुद्ध और पवित्र रखें, इसलिए वह सभी कामुकता के कार्य, भावनाएं, बातें, विचार, इच्छाएं और कुछ भी जो इन्हें प्रोत्साहन देती है, को मना करता है।

इफि-5:3,4, I कुरि-6:18,19 मत-5:27,28, इफि-5:18, I कुरि-15:33

प्रभु का दिन - XLII

प्रश्न 110 : परमेश्वर ने आठवीं आज्ञा में क्या मना किया है?

उत्तर : परमेश्वर सिर्फ ऐसी चोरी और डकैती को ही नहीं मना करता, जो न्यायालय द्वारा दण्डित की जाती हैं। वरन् सभी अनुचित चालाकी, जिससे हम अपने पड़ोसी की सम्पत्ति हासिल करना चाहते हैं, चाहे ताकत से अथवा अपने हक जताकर, जैसे अनुचित तोल, माप, नाप और माल, नकली सिक्के, अधिक ब्याज, अथवा अन्य कोई माध्यम, सभी उसके लिए चोरी है और परमेश्वर द्वारा मना किये गये हैं। उसी प्रकार लालच और उसके दिये उपहारों (आशीषों) का गलत इस्तेमाल और व्यर्थता भी चोरी है।

I कुरि-6:10, 5:10, यशा-33:1, लूका-3:14, I थिस-4:6, नीति-11:1, 16:11, यहेज-45:9,10, व्य-25:13, भज-15:5, लूका-6:35, I कुरि-6:10, नीति-23:20, 21- 21:20

प्रश्न 111 : लेकिन परमेश्वर इस आज्ञा में तुम से क्या चाहता है?

उत्तर : वह चाहता है, कि मैं अपने पड़ोसी के लिए जो भी कर सकता हूँ करूँ, और उसके साथ ऐसा बर्ताव करूँ, जैसा मैं चाहता हूँ कि दूसरे मेरे साथ करें और ईमानदारी से परिश्रम करूँ, जिससे मैं जरूरतमंद की मदद कर सकूँ।

मत-7:12

प्रभु का दिन - XLIII

प्रश्न 112 : नौंवी आज्ञा में आवश्यक क्या है?

उत्तर : नौवी आज्ञा में आवश्यक है, कि मैं किसी भी मनुष्य के विरुद्ध झूठी गवाही न दूं, किसी की बात तो तोड़-मोड़ कर न कहूँ, पीठ पीछे बुराई अथवा निन्दा न करूँ, किसी का न्याय अथवा बिना सुने किसी मनुष्य पर दोष लगाने में जल्दबाजी न करूँ। परंतु सभी प्रकार के झूठ और धोखे को शैतान के काम समझकर उनसे दूर रहूँ, अन्यथा मैं अपने ऊपर परमेश्वर के क्रोध को ले आऊँगा। इसी प्रकार सभी न्याय और अन्य बातों में मैं सत्य से प्रेम रखूँ, इसे न्याय के लिये कहूँ और अंगीकार करूँ, और जहाँ तक मेरे लिए संभव है मैं अपने पड़ोसी के सम्मान की रक्षा और बढ़ोत्तरी करूँ।

नीति-15:5,9, 21:28, भज-15:3, 50:19,20, रोमि-1:30, मत-7:1, लूका-6:37, यूह-8:44, नीति-12:22, I कुरि-13:6, इफि-4:25, I पत-4:8

प्रभु का दिन - XLIV

प्रश्न 113 : दसवीं आज्ञा हमसे क्या चाहती है?

उत्तर : दसवी आज्ञा चाहती है, कि परमेश्वर की आज्ञा के विरोध में कोई भी छोटी बात अथवा विचार कभी भी हमारे हृदय में नहीं आने चाहिए, परंतु हमेशा हम अपने पूर्ण हृदय से सभी पापों से नफरत करें और सभी धार्मिकता में आनन्दित रहें।
रोमि-7:7

प्रश्न 114 : परंतु क्या वे जो परमेश्वर के लिये परिवर्तित हो चुके हैं, इन आज्ञाओं को पूर्णता पूरा कर सकते हैं?

उत्तर : नहीं ! वरन् अत्यन्त पवित्र मनुष्य इस जीवन में सिर्फ आज्ञाकारिता की छोटी सी शुरूआत ही करता है। अब तो वे सिर्फ थोड़ी नहीं, वरन् परमेश्वर की सभी आज्ञाओं के अनुसार अच्छे उद्देश्य के साथ, जीवन जीना प्रारम्भ करते हैं।
I यूह-1:8, रोमि-7:14,15, सभो-7:20, I कुरि-13:9, रोमि-7:22, भज-1:2

प्रश्न 115 : तब क्यों, परमेश्वर ने इन दस आज्ञाओं को इतनी कठोरता से प्रचारित किया, जबकि इस जीवन में कोई इन्हें पूरा नहीं कर सकता?

उत्तर : **पहला कारण** -कि हम अपने पूर्ण जीवनकाल में अधिक से अधिक अपने पापी स्वभाव को समझ सकें, और बहुतायत से मसीह में पापों से छुटकारा और धार्मिकता के खोजी हों, **दूसरा**-हम परमेश्वर से पवित्र आत्मा के अनुग्रह के लिए निरंतर यत्न और प्रार्थना करें, कि अधिक से अधिक परमेश्वर की समानता में नये होते जाए, जब तक कि इस जीवन के पश्चात हम सिद्धता के उद्देश्य तक न पहुँच जाएं।
रोमि-3:20, I यूह-1:9, भज-32:5, मत-5:6, रोमि-7:24, 25, I कुरि-9:24, फिलि-3:12-14

प्रभु का दिन - XLV

प्रश्न 116 : मसीहीयों के लिये प्रार्थना करना क्यों आवश्यक है?

उत्तर : क्योंकि, प्रार्थना धन्यवादिता का मुख्य भाग है, जो परमेश्वर हमसे चाहता है और क्योंकि परमेश्वर अपना अनुग्रह और पवित्र आत्मा सिर्फ उन्हें देगा जो हृदय की कराहट, इच्छा से, निरंतर उससे मांगते और उनके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।
भज-50:14, मत-7:7, लूक-11:9,13, I थिस-5:17

प्रश्न 117 : ऐसी प्रार्थना जिससे परमेश्वर आनन्दित हो और सुने उसमें क्या होता है?

उत्तर : **पहला**-कि हम हृदय से सिर्फ एक सच्चे परमेश्वर को पुकारें, जिसने अपने आपको अपने वचन में प्रगट किया है, सब बातों को उसकी इच्छानुसार उससे मांगने के लिये उसने हमें आज्ञा दी है। **दूसरा**-कि हम सही प्रकार से अपनी जरूरत और दु:खों, तंगहाली को जाने, ताकि हम अपने आपको उसके गौरवशाली चेहरे के सम्मुख नम्र कर सकें, **तीसरा**-कि हम दृढ़ता से आश्वस्त हों, कि यद्यपि हम इसके योग्य नहीं हैं, फिर भी मसीह हमारे प्रभु के कारण वह हमारी प्रार्थना जरूर सुनेगा, जैसा कि उसने अपने वचन में वादा किया है।
यूह-4:24, भज-145-18, प्रका-19:1, यूह-4:22-24, रोमि-8:26, याक-1:5, I इति-20:12, भज-2:11, 34:18, यशा-66:2, रोमि-10:13, याक-1:6, यूह-14:13, 16:23, दान-9:18, मत-7:8, भज-27:8

प्रश्न 118 : परमेश्वर ने हमें क्या आज्ञा दी है, कि हम उससे मांगे ?

उत्तर : सभी कुछ जो प्राण और शरीर के लिए आवश्यक है, जिनका हमारे प्रभु ने उस प्रार्थना में समावेश किया है, जिसे उसने स्वयं हमें सिखाया।
याक-1:17, मत-6:33

प्रश्न 119 : प्रभु की प्रार्थना क्या है?

उत्तर : प्रभु प्रार्थना है -
हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में है,
तेरा नाम पवित्र माना जाए,
तेरा राज्य आए,
तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो।
हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जैसे हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर,
और हमें परीक्षा में न ला परंतु बुराई से बचा।
क्योंकि राज्य ओर पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं-आमीन
मत-6:9-13, लूका-11:2-4

प्रभु का दिन - XLVI

प्रश्न 120 : क्यों मसीह ने हमें आज्ञा दी कि हम परमेश्वर को, हे हमारे पिता कहकर बुलाएं?

उत्तर : ताकि हम प्रार्थना के शुरूआत में इस बात को समझ लें, कि परमेश्वर के प्रति बच्चे के समान आदर और भरोसा ही हमारी प्रार्थना का आधार होना चाहिए, अर्थात मसीह के द्वारा परमेश्वर हमारा पिता बन गया है और हमारे सांसारिक माता, पिता हमें सांसारिक चीजों के लिये मना कर सकते हैं, उसकी तुलना में वह हमें बहुत कम (शायद ही) मना करेंगे, जो हम उससे सच्चे विश्वास से मांगते हैं।

मत-7:9-11, लूका-11:11-13

प्रश्न 121 : तू जो स्वर्ग में है क्यों जोड़ा (लिखा) गया है?

उत्तर : इसलिए कि हमें परमेश्वर की स्वर्गीय महिमा का कोई सांसारिक विचार न हो और उसकी असीमित सामर्थ से सभी कुछ जो शरीर और प्राण के लिए आवश्यक है, कि प्राप्ति की आशा रखें।

यिर्म-23:23, प्रे-17:24, 25,27, रोमि-10:12

प्रभु का दिन - XLVII

प्रश्न 122 : पहली विनती क्या है?

उत्तर : **तेरा नाम पवित्र माना जाए।** मतलब कि तू हमें योग्यता दे कि हम तुझे सही प्रकार से समझ सकें और सभी कार्यों से तेरी पवित्रता, महिमा और स्तुति करें, जिससे तेरी सामर्थ, बुद्धि, भलाई, न्याय, करुणा, और सच्चाई की चमक फैल सके और हम अपने पूर्ण जीवन, विचार, शब्दों और कार्यों को इस तरह से व्यस्थित और निर्देशित कर सकें, कि हमारे कारण तेरे नाम की निन्दा नहीं, वरन् आदर और स्तुति हो।

यूह-17:3, यिर्म-9:24, 31:33,34, मत-16:17, याक-1:5, भज-119:105, भज-119:137, लूका-1:46, 47, 68, 69 रोमि-11:33, भज-71:1

प्रश्न 123 : दूसरी विनती क्या है?

उत्तर : **तेरा राज्य आये।** अर्थात - यह कि तू अपने वचन और आत्मा से हम पर ऐसी प्रभुता करे, कि हम अधिक से अधिक अपने आपको तेरे लिये समर्पित कर सकें। अपनी कलीसिया को सुरक्षित रख और उसकी बढ़ोत्तरी कर, शैतान के कार्यों एवं सामर्थ, जो तेरे विरुद्ध अपने आपको सम्मान (ऊँचा) देती और तेरे वचन के विरुद्ध दुष्ट योजनाएं बनाती हैं, का नाश कर, जब तक कि तेरा राज्य पूर्णता स्थापित न हो।

भज-1:43:10, 119-5, मत-6:33, भज-51:18, 122:6, I यूह-3:8, रोमि-6:20

प्रभु का दिन - XLIX

प्रश्न 124 : तीसरी विनती क्या है?

उत्तर : **तेरी इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो।** अर्थात-सामर्थ दे कि हम और सभी मनुष्य अपनी इच्छाओं का इन्कार कर सकें और बिना इंकार किये तेरी आज्ञा मानें, जो एकमात्र अच्छी है। ताकि सभी अपने अधिकार और बुलाहट के कर्तव्य को, स्वेच्छा और ईमानदारी से पूरा कर सके। जैसे स्वर्ग में स्वर्गदूत करते हैं।

मत-16:24, तीत-2:11,12, लूका-22:42, इफि-5:10, रोमि-12:2, I कुरि-7:24, भज-103:20, 21

प्रभु का दिन - L

प्रश्न 125 : चौथी विनती क्या है?

उत्तर : **हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे।** अर्थात-हमारी सभी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके आनन्दित हो, कि इससे हम तुझे सारी आशीषों का झरना (स्त्रोत) स्वीकार कर सकें, और मान सकें कि बिना तेरे आशीष के न हमारी देखरेख, और परिश्रम न ही तेरे दाने हमारे किसी लाभ के हैं, और इस प्रकार हम अपने भरोसे को सभी प्राणियों (व्यक्तियों) से हटाकार सिर्फ तुझ पर रख सकें।

भज-145:15, 104:27, मत-6:26, याक-1:17, प्रे-14:17, 17:25, I कुरि-15:58, व्य-8:3, भज-37:16, 127:1,2, भज-55:22, 62:10, यिर्म-17:5,7

प्रभु का दिन - LI

प्रश्न 126 : पाँचवीं विनती क्या है?

उत्तर : **''जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू हमारे अपराधों को क्षमा कर''** अर्थात-मसीह के लहू के कारण, हम दु:खी पापियों पर, हमारे गुनाहों और उस बुराई जो हमेशा हमसे जुड़ी रहती है, का बोझ तू हम पर नहीं डालता, जब हम तेरे इस अनुग्रह को अपने लिये

प्राप्त करते हैं। तब हमारा उद्देश्य है कि हम अपने पड़ोसी को हृदय से क्षमा करें।

भज-51:1, 143:2, I यूह-2:1, रोमि-8:1, मत-6:14

प्रभु का दिन - LII

प्रश्न 127 : छठी विनती क्या है?

उत्तर : **और हमें परीक्षा में न ला परंतु बुराई से बचा।** अर्थात-जबकि हम अपने आपमें अत्यन्त कमजोर है कि हम एक क्षण भी स्थिर नहीं रह सकते, और इसके अतिरिक्त हमारा दुश्मन शैतान, संसार और हमारा स्वयं का पाप हम पर आक्रमण करना नहीं छोड़ता, इसलिए हमें अपनी पवित्र आत्मा की सामर्थ में संभालने, सुरक्षा, और शक्ति देने में आनन्दित हो, ताकि हम इस आत्मिक युद्ध में परास्त न हो, वरन् हमेशा इसका दृढ़ता से विरोध करते रहे, अन्ततः हम पूर्ण विजयी हो जाए।

यूह-15:5, भज-103:14, I पत-5:8, इफि-6:12, यूह-15:19, रोमि-7:23, गला-5:17, मत-26:41, मर-13:33, I थिस-3:13, 5:23

प्रश्न 128 : तुम अपनी प्रार्थना का समापन कैसे करते हो?

उत्तर : **क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही है।** अर्थात-हम यह सब तुझसे मांगते है, क्योंकि तू हमारा राजा है जिसके पास सभी कुछ पर प्रभुता और सामर्थ है, जो इच्छा रखता और योग्य है, कि हमें सभी अच्छी वस्तुएं दे और इसलिए हमारी नहीं वरन् तेरे पवित्र नाम की महीमा युगानयुग होती रहे।

रोमि-10:12, II पत-2:9, यूह-14:13, यिर्म-33:8, भज-115:1

प्रश्न 129 : आमीन शब्द का क्या तात्पर्य है?

उत्तर : आमीन शब्द का तात्पर्य है- यह सत्यता और निश्चयता से पूरा होगा, क्योंकि मेरी प्रार्थनाएं मेरे हृदय में सोचने से, कि मैं उससे ये चीजें माँगता हूँ, से अधिक निश्चयता के साथ परमेश्वर ने सुनी है।

II कुरि-1:20, II तिमु-2:13

V V V